



भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर
Indian Institute of Management Kashipur

जलाशम

देवभूमेः दिव्यशान्तिः



संपादकीय समिति

(भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर)

- प्रो. के. एन. बधानी
- प्रो. शुभम शर्मा
- डॉ. मोहम्मद आसिफ खान
- श्री मनीष कुमार शर्मा
- श्री अमित प्रताप सिंह
- श्री जीतपाल सिंह
- श्री हरीश गिरी

प्रतिलिप्यधिकार सूचना

© भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त सामग्री - जैसे लेख, आलेख, कविता, विचार अथवा अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ - का प्रतिलिप्यधिकार भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर के पास सुरक्षित है। प्रतिलिप्यधिकार धारक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका की किसी भी सामग्री को किसी भी माध्यम से, चाहे वह मुद्रित, फोटोकॉपी, डिजिटल, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक अथवा किसी भी प्रकार की सूचना संग्रहण या पुनर्प्राप्ति प्रणाली के अंतर्गत हो, पुनरुत्पादित, संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित

प्रकाशन का प्रकार: पत्रिका

© भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर

संस्करण: प्रथम

वर्ष: 2026

प्रकाशक:

भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर

संपादकीय समिति



प्रो. के. एन. बधानी



प्रो. शुभम शर्मा



डॉ. मोहम्मद आसिफ खान



श्री मनीष कुमार शर्मा



श्री अमित प्रताप सिंह



श्री जीतपाल सिंह



श्री हरीश गिरी

अनुक्रमणिका

संपादकीय समिति का संदेश
निदेशक की कलम से
अन्वेष (लेख / कविता)

- काशीपुर : इतिहास , प्रकृति और प्रगति का संगम
- उत्तराखंड के लिए वरदान भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर
- प्रेमचंद से प्रोग्रामिंग तक: परिवर्तन के साथ कदमताल
- बदलती दुनिया में युवा नेतृत्व की भूमिका
- परिवर्तनशील विश्व में ज्ञान, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व
- मानव निर्मित कृत्रिम बुद्धिमत्ता: परिवर्तनशील विश्व का गतिशील पहिया
- डिजिटल मीडिया एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में शिक्षा का बदलता स्वरूप
- एआई: सुविधा, संभावना और चुनौती
- नेतृत्व का प्रथम पाठ: घर, हरियाली और मानवता
- भूख
- सामाजिक बदलाव में शिक्षा का महत्व
- तकनीक, संवेदनशीलता और नेतृत्व : भविष्य के प्रबंधकों की त्रिवेणी
- घर- जहाँ दिल हमेशा लौटना चाहता है।
- शिक्षा एक अधिकार
- 84 दिन का सवाल: आज के युवा के लिए श्रीदेव सुमन क्यों जरूरी हैं?
- हिमालय बचाना आज हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी
- घर से मंज़िल तक
- बूढ़ी आँखों का इंतजार
- गुनाह की परिभाषा
- किताबों से इश्क़ का ये आखिरी दौर है
- मेरा प्रयास
- बचपन एक वरदान
- परिवर्तन की आँधी
- भारत की आत्मवाणी
- हमारा भारत
- मासूम मुस्कानें जो लौट न सकीं
- बगिया का कोना
- साहस
- माँ
- पर्यावरण
- देवभूमि के रीति-रिवाज और जीवन

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित किए गए कार्यक्रम / उपलब्धियाँ

संपादकीय समिति का संदेश

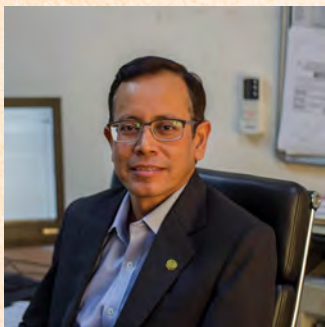
हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि हम अपनी हिंदी पत्रिका — **जलाशम** — के प्रथम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। यह केवल एक प्रकाशन का आरम्भ नहीं, बल्कि विचारों, संवेदनाओं और सृजनशील अभिव्यक्ति की एक नई यात्रा का शुभारम्भ है। **जल** (पानी) और **अशम** (पत्थर) के इस सार्थक समन्वय में प्रबंधन शिक्षा की जीवंत चेतना प्रतिबिंबित होती है। जल हमें निरंतर गतिशील बने रहने, परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने और विचारों में चपलता (एजिलिटी) बनाए रखने की प्रेरणा देता है। आज के तीव्र परिवर्तनशील आर्थिक एवं संगठनात्मक परिवेश में वही नेतृत्व सार्थक सिद्ध होता है जो सीखने की सतत प्रक्रिया से जुड़ा रहे, संवाद के प्रति खुला रहे और नवाचार को सकारात्मक ऊर्जा के रूप में ग्रहण कर सके। प्रबंधन शिक्षा इसी प्रवाहमान दृष्टि को विकसित करती है — जहाँ ज्ञान अनुभव, सहभागिता और प्रयोगधर्मिता के माध्यम से निरंतर विस्तार पाता है।

इसके साथ ही **अशम** स्थिरता, गहराई और मूल्यों की दृढ़ता का प्रतीक है। यह हमें स्मरण कराता है कि किसी भी प्रबंधकीय निर्णय की विश्वसनीयता उसके सुदृढ़ बौद्धिक आधार, संतुलित दृष्टिकोण और नैतिक प्रतिबद्धता में निहित होती है। प्रबंधन शिक्षा द्वारा विकसित विश्लेषणात्मक क्षमता, अनुशासित चिंतन और दूरदर्शी दृष्टि नेतृत्व को क्षणिक प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर दीर्घकालिक हित में निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करती है। पत्थर की भाँति अडिग यह आधार व्यक्तित्व में धैर्य, स्थिरता और उत्तरदायित्व का विकास करता है। इस प्रकार जल की प्रवाहशीलता और अशम की दृढ़ता मिलकर उस आदर्श प्रबंधक की छवि निर्मित करती हैं, जो सिद्धांतों में अटल और आचरण में लचीला हो — और यही संतुलन **जलाशम** का मूल सन्देश है।

जलाशम हिम और हिमनदों की उस पावन अनुभूति को भी अभिव्यक्त करता है, जहाँ से जीवनदायिनी नदियों का उद्गम होता है। उत्तराखंड की सुरम्य हिमालयी धरती पर स्थित भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर के लिए यह प्रतीक विशेष अर्थ रखता है, क्योंकि यही प्रदेश देश की अनेक महत्वपूर्ण नदियों और समृद्ध पारिस्थितिक परंपराओं का स्रोत है। हिमालय की शांत ऊँचाइयाँ हमें संतुलन, धैर्य और दूरदृष्टि का पाठ पढ़ाती हैं। यह संदर्भ हमें प्रकृति के साथ समन्वित विकास की दिशा में सोचने और कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। आज प्रबंधन शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संवेदनशीलता और सतत् विकास के प्रति प्रतिबद्ध नेतृत्व का निर्माण भी है। **जलाशम** के माध्यम से संस्थान इस संकल्प को अभिव्यक्त करता है कि यहाँ से विकसित होने वाला प्रबंधकीय चिंतन विवेकपूर्ण, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और पर्यावरण के प्रति सजग होगा — ताकि प्रगति का मार्ग समाज और प्रकृति, दोनों के लिए समान रूप से हितकारी बन सके।

हम आशा करते हैं कि **जलाशम** विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और संस्थान के कर्मचारियों के लिए एक सशक्त एवं प्रेरणादायी मंच सिद्ध होगा, जहाँ वे अपनी सृजनात्मकता, विचारों और अनुभवों को साझा कर सकें। यह पत्रिका संवाद, सह-सृजन और सामूहिक बौद्धिक समृद्धि की एक सुदृढ़ परंपरा को आगे बढ़ाने का माध्यम बने — ऐसी हमारी आकांक्षा है। इसी आशा के साथ हम जलाशम की इस पहली धारा आप सभी को समर्पित करते हैं।

निदेशक की कलम से



प्रो. नीरज द्विवेदी
निदेशक

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2011 में स्थापित, भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर राष्ट्रीय महत्व का एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान है, जो जिम्मेदार नेतृत्व के विकास, उच्च गुणवत्ता शोध को प्रोत्साहित करने तथा साक्ष्य- आधारित सार्वजनिक नीति और सतत आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर, 200 एकड़ के पूर्णतः आवासीय परिसर में काशीपुर उत्तराखंड के जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क से लगभग 25 किलोमीटर दूर हिमालय की तलहटी में स्थित है। यह परिसर शैक्षणिक उत्कृष्टता, बौद्धिक चिंतन तथा आत्ममंथन पर आधारित अध्ययन के लिए एक शांत, हरित एवं प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करता है।

इस वर्ष भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर ने अपने स्थापना के 15वें वर्ष में प्रवेश किया है, जिसके उपलक्ष्य में संस्थान की हिंदी पत्रिका का प्रकाशन शुरू करने का निर्णय लिया गया। हिंदी पत्रिका संस्थान की बौद्धिक, सांस्कृतिक और वैचारिक पहचान को सुदृढ़ करने का एक सशक्त माध्यम है। यह संस्थान की शैक्षणिक उपलब्धियों, शोध कार्यों, नवाचारों और सामाजिक सरोकारों को हिंदी भाषा के माध्यम से व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाती है। इसके माध्यम से संस्थान राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भूमिका और योगदान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकता है तथा हिंदी को शैक्षणिक और बौद्धिक संवाद की भाषा के रूप में प्रोत्साहित करता है। हिंदी पत्रिका संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को रचनात्मक अभिव्यक्ति, लेखन कौशल और आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने का अवसर प्रदान करती है। इससे उन सभी की साहित्यिक अभिरुचि, भाषा दक्षता और शोध प्रवृत्ति का विकास होता है। साथ ही, यह उन्हें सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करने का मंच देती है, जिससे उनका आत्मविश्वास और बौद्धिक परिपक्वता बढ़ती है।

भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर की हिंदी पत्रिका का प्रथम संस्करण आपके सामने प्रस्तुत है। पाठकों के लिए हिंदी पत्रिका ज्ञान, विचार और संवेदना का एक महत्वपूर्ण स्रोत होती है। यह समसामयिक विषयों, सामाजिक मुद्दों, शोधपरक लेखों और साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से पाठकों को जागरूक करती है और उनके दृष्टिकोण का विस्तार करती है। सरल एवं प्रभावी भाषा में प्रस्तुत सामग्री पाठकों को सोचने समझने और संवाद करने के लिए प्रेरित करती है।

भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर की हिंदी पत्रिका, संस्थान की प्रगति और लक्ष्य प्राप्ति की ओर एक सराहनीय कदम है। मैं संस्थान के सभी संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं एवं संपादकीय समिति को हिंदी पत्रिका के पहले सफल प्रकाशन पर बधाई देता हूँ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

काशीपुर : इतिहास, प्रकृति और प्रगति का संगम

हिमालय की तलहटी में बसे तराई के हरे-भरे विस्तार पर काशीपुर केवल एक औद्योगिक नगर नहीं है — यह भारत की उस निरंतरता का प्रतीक है, जहाँ प्राचीन सभ्यता आधुनिक उद्यम से हाथ मिलाती है। यहाँ पौराणिक स्मृतियाँ पुरातात्विक अवशेषों में जीवित हैं, कभी घने रहे वन आज उपजाऊ खेतों में बदल चुके हैं, और सदियों पुराने व्यापारिक-धार्मिक केंद्र आज उद्योग, कृषि और प्रबंधन-शिक्षा के आधुनिक प्रतिष्ठानों में ढल गए हैं।

आज का काशीपुर उत्तराखण्ड के अग्रणी औद्योगिक और शैक्षिक नगरों में गिना जाता है, पर इसकी पहचान इतनी सीधी नहीं है। इसकी यात्रा लगभग दो हजार वर्षों तक फैली है — गुप्तकालीन मंदिरों से लेकर बौद्ध केंद्र गोविषाण तक, चन्द राजाओं के शासन से औपनिवेशिक प्रशासन तक, और विभाजन के बाद के पुनर्वास से लेकर भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) काशीपुर जैसी राष्ट्रीय संस्था तक। यही निरंतरता काशीपुर को केवल एक नगर से कहीं अधिक — भारतीय इतिहास की एक जीवंत कड़ी — बना देती है।

काशीपुर की पहचान उसकी भौगोलिक स्थिति में गहराई से बसी है। यह नगर हिमालय की तलहटी और गंगा के विशाल मैदान के बीच फैले उस भूभाग में स्थित है, जिसे तराई कहा जाता है। सदियों तक यह क्षेत्र घने साल और मिश्रित पर्णपाती वनों से ढका रहा — एक ऐसी हरित पट्टी, जो उत्तराखण्ड से नेपाल तक अबाध फैली थी और जहाँ हाथी, बाघ, तेंदुए, हिरण, जंगली सूअर तथा असंख्य पक्षी-प्रजातियाँ स्वच्छन्द विचरण करती थीं।

पर तराई केवल जैव-विविधता की भूमि नहीं रही। हिमालयी नदियों द्वारा सदियों से बिछाई गई उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी ने इसे भारत के सर्वाधिक उत्पादक कृषि क्षेत्रों में गिना जाने योग्य बना दिया। प्रचुर भूजल, अनुकूल जलवायु और नियमित वर्षा के सहारे यहाँ धान, गेहूँ, गन्ना, मक्का और विविध फल-सब्जियाँ प्रचुरता से उपजते हैं। कृषि आज भी काशीपुर की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनी हुई है।

भारत में बिरले ही ऐसे नगर हैं, जिन्हें एक साथ तीन भिन्न आर्थिक शक्तियों का संबल मिला हो। काशीपुर इस दृष्टि से असाधारण स्थिति में है।

उत्तर-पूर्व की ओर नैनीताल, भीमताल, मुक्तेश्वर और रानीखेत जैसे पर्वतीय पर्यटन स्थल हैं, जो हर वर्ष लाखों यात्रियों को खींच लाते हैं, जबकि उत्तर-पश्चिम में, पहाड़ों के कहीं अधिक निकट, भारत का सबसे पुराना और विश्वविख्यात राष्ट्रीय उद्यान — जिम कॉर्बेट — स्थित है। काशीपुर के चारों ओर तराई की उपजाऊ ज़मीन फैली है, जो सघन कृषि और कृषि-आधारित उद्यमों को सहारा देती है। और इस त्रिकोण का तीसरा स्तंभ है — ऑटोमोबाइल कल-पुर्जें, इंजीनियरिंग सामान, पैकेजिंग, दवा-निर्माण, विद्युत उपकरण, कागज़ और खाद्य-प्रसंस्करण जैसे उद्योगों का सघन जाल, जिसने काशीपुर को उत्तराखण्ड के सबसे बड़े औद्योगिक समूहों में शुमार करा दिया है। पर्यटन, कृषि और उद्योग का यह अनूठा मेल काशीपुर को वह विविध आर्थिक आधार देता है, जो बिरले मंझोले नगरों को नसीब होता है।

काशीपुर का अतीत केवल अभिलेखों और खुदाई में मिले अवशेषों में सिमटा नहीं — वह लोककथाओं और सांस्कृतिक परम्पराओं में भी उतना ही जीवंत है। नगर के कई स्थल महाभारत से जुड़ी जनश्रुतियों से बँधे हैं। इनमें सबसे चर्चित है द्रोण सागर — एक विशाल जलाशय, जिसके विषय में मान्यता है कि पाण्डवों ने अपने गुरु द्रोणाचार्य के प्रति श्रद्धा जताने के लिए इसका निर्माण या जीर्णोद्धार कराया था। कुछ स्थानीय परम्पराएँ यह भी मानती हैं कि काशीपुर का प्राचीन नाम उज्जैनी था — जो मध्य भारत के प्रसिद्ध उज्जैन से अलग है। इन कथाओं का प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण भले ही

सीमित हो, पर इनका सांस्कृतिक असर गहरा है — नगर के धार्मिक उत्सवों, स्थानीय मेलों और अनेक स्थल-नामों में यह पौराणिक विरासत आज भी साँस लेती है।

आधुनिक काशीपुर बनने से सदियों पहले, यह भूभाग गोविषाण (Govisana) के नाम से जाना जाता था — सातवीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में उत्तर भारत का एक समृद्ध और सुरक्षित नगर। इसका सबसे प्रामाणिक विवरण चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग (Xuanzang) के यात्रा-वृत्तांत में मिलता है, जो बौद्ध ग्रंथों की खोज में लगभग 636 ईस्वी के आसपास यहाँ पहुँचे। उन्होंने इसे चीनी उच्चारण में किउ-पि-श्वंग-ना कहा — एक नाम, जिसे उन्नीसवीं सदी के पुरातत्त्वविद् सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने बाद में गोविषाण से जोड़ा।

ह्वेनसांग ने इसे एक सुव्यवस्थित, ऊँचाई पर बसा और दुर्गम नगर बताया, जिसके चारों ओर उपवन, सरोवर और मछलियों से भरे जलाशय फैले थे। यहाँ बौद्ध विहार और हिन्दू मंदिर पास-पास फल-फूल रहे थे — उस दौर के भारत में सहज धार्मिक सहअस्तित्व का जीवंत उदाहरण। गोविषाण केवल आस्था का केंद्र नहीं, वस्त्रों और धातु-पात्रों के व्यापार का भी जाना-माना ठिकाना था। दिलचस्प है कि व्यापार और उद्यम की यही प्रवृत्ति, बदले हुए रूप में, आज के औद्योगिक काशीपुर में फिर दिखाई देती है — समय बदला, पर नगर का चरित्र किसी गहरे स्तर पर वही बना रहा।

ह्वेनसांग का गोविषाण महज़ यात्रा-वृत्तांत की कल्पना नहीं था — आज के काशीपुर की मिट्टी के नीचे उसके भौतिक प्रमाण अब भी दबे हैं। उन्नीसवीं सदी में सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने नगर के निकट भीम गजा नामक स्थल पर एक विशाल संरचना के अवशेष खोजे — यह प्राचीन गोविषाण का सबसे ऊँचा हिस्सा था। इसके बाद भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) ने 1939-40, 1965-66 और 1970-71 — तीन अलग-अलग चरणों में यहाँ व्यवस्थित खुदाई की।

इन खुदाइयों में एक विशाल मंदिर परिसर के अवशेष मिले, जिसका निर्माण कई शताब्दियों में चरणबद्ध ढंग से हुआ। सबसे पुराना चरण गुप्तकाल (चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी) का माना जाता है — तब यहाँ कच्ची ईंटों का एक ऊँचा चबूतरा और उस पर संभवतः एक गर्भगृह रहा होगा। छठी-सातवीं शताब्दी के आसपास इसके चारों ओर दो परकोटे जोड़े गए, जिससे यह विस्तृत होकर एक सुविकसित पंचायतन मंदिर परिसर में ढल गया। 1971 की खुदाई में मिली भगवान विष्णु के त्रिविक्रम स्वरूप की एक अष्टधातु प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है — यह आज दिल्ली के एक संग्रहालय में सुरक्षित है। स्थल से मिले मृद्भाण्ड इस बात के और प्रमाण जोड़ते हैं कि यह बस्ती लंबे समय तक निरंतर आबाद रही।

मध्यकाल में, ग्यारहवीं शताब्दी के आसपास कत्तूरी साम्राज्य के बिखरने के बाद, कुमाऊँ में चन्द राजवंश की सत्ता उभरी और धीरे-धीरे इस क्षेत्र तक फैली। इसी दौर से आधुनिक नगर का नाम और, सबसे प्रचलित परंपरा के अनुसार, इसकी स्थापना भी जुड़ी है। चम्पावत के चन्द शासक देवी चन्द के अधीन तराई के प्रशासक रहे काशीनाथ अधिकारी को इस बसावट का श्रेय दिया जाता है, जो आगे चलकर काशीपुर के रूप में विकसित हुई — अधिकांश स्रोत इसे अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में रखते हैं, हालाँकि कुछ अभिलेख 1639 जितनी पुरानी तिथि की ओर इशारा करते हैं। नगर की ठीक-ठीक स्थापना-तिथि आज भी इतिहासकारों के बीच विवाद का विषय बनी हुई है।

चन्द शासन के अधीन यह नगर व्यापार, तीर्थयात्रा और स्थानीय प्रशासन का एक सक्रिय केंद्र बन गया था। कुमाऊँ की पहाड़ियों और उत्तर भारत के विशाल मैदानों के ठीक बीच स्थित होने के कारण यह स्वाभाविक रूप से एक व्यापारिक प्रवेश-द्वार बन गया — पहाड़ों से ऊन, जड़ी-बूटियाँ और वन-उत्पाद यहीं से मैदानों तक पहुँचते, और मैदानी बाज़ारों का सामान पहाड़ों की ओर लौटता। यह स्थिति अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक बनी रही, जब तत्कालीन प्रशासक नन्द राम ने व्यवहारतः स्वतंत्र सत्ता जमा ली — यह उस बदलती सत्ता-संरचना का पूर्वाभास था, जो आगे चलकर इस

क्षेत्र की नियति तय करने वाली थी। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ ने काशीपुर के इतिहास को एक नया मोड़ दिया। 1801 में स्थानीय प्रशासक शिव लाल के हाथों यह क्षेत्र ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया गया — रुहेलखण्ड के व्यापक विलय का ही एक हिस्सा, जो कूटनीतिक समझौते से हुआ, सैन्य विजय से नहीं। चावल की खेती के अनुकूल उपजाऊ ज़मीन और सुरक्षा की दृष्टि से लाभप्रद भौगोलिक स्थिति ने इसे कंपनी के लिए एक बहुमूल्य अधिग्रहण बना दिया।

1814 से 1816 के बीच चले आंग्ल-गोरखा युद्ध के दौरान काशीपुर की सामरिक अहमियत और स्पष्ट हो गई, जब यह कुमाऊँ में गोरखा सेनाओं के विरुद्ध अभियानों का अग्रिम अड्डा बना। तराई की लंबे समय से विवादित सीमा को लेकर छिड़ा यह संघर्ष 1816 की सुगौली संधि के साथ थमा, जिसके तहत नेपाल ने तराई पर अपना दावा छोड़ा और कुमाऊँ-गढ़वाल की पहाड़ियाँ अंग्रेजों को सौंप दीं। इस संधि के बाद काशीपुर को नवगठित तराई ज़िले का मुख्यालय बनाया गया — प्रशासनिक महत्व में यह एक बड़ी छलांग थी, जिसने आने वाले दशकों तक नगर की भूमिका को मज़बूती से टिकाए रखा। 1837 में इसे मुरादाबाद ज़िले में शामिल कर लिया गया, 1872 में यह विधिवत नगरपालिका बनी, और अंततः 26 जनवरी 2013 को इसे पूर्ण नगर निगम का दर्जा मिला।

बीसवीं शताब्दी ने काशीपुर के सामाजिक ताने-बाने में सबसे गहरा बदलाव लिखा। सिख किसान परिवार तराई की उपजाऊ पर बिरली आबाद ज़मीन में सदी की शुरुआत से ही बसने लगे थे, पर 1947 के विभाजन के बाद पश्चिमी पंजाब से आए शरणार्थियों की बड़ी लहर ने यह प्रवास कहीं अधिक व्यापक बना दिया — काशीपुर भी इसका एक बड़ा केंद्र बना। इन परिवारों ने अपने साथ आधुनिक खेती के तरीके, यंत्रीकरण और व्यावसायिक पैमाने की कृषि ली, और महज़ एक पीढ़ी में तराई के कृषि-परिदृश्य को पूरी तरह बदल डाला।

आगे चलकर कई परिवारों ने परिवहन, व्यापार और विनिर्माण की ओर रुख किया, और इस तरह उस उद्यमशील नींव की रचना की, जिस पर काशीपुर का औद्योगिक भविष्य खड़ा हुआ। इस ऐतिहासिक प्रवास की छाप आज भी साफ़ दिखती है — कृषि की समृद्धि में, शहर की व्यापारिक संस्कृति में, और उस बहुभाषी सामाजिक ताने-बाने में, जहाँ हिन्दी, पंजाबी, उर्दू और तराई की स्थानीय बोलियाँ बाज़ारों और मोहल्लों में साथ-साथ गूँजती हैं।

स्वतंत्रता के बाद के दशकों में काशीपुर का क्रमिक औद्योगीकरण हुआ। बेहतर सड़क-संपर्क, उपलब्ध भूमि, प्रचुर जल-संसाधन और दिल्ली तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से निकटता — इन सबने मिलकर यहाँ बड़े पैमाने पर निवेश खींचा। आज यही औद्योगिक आधार कहीं व्यापक रूप में फैल चुका है — प्लास्टिक जैसे नए क्षेत्र भी अब इसमें जुड़ गए हैं — और काशीपुर उत्तराखण्ड के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में गिना जाता है, जो न केवल राज्य को, बल्कि पड़ोसी उत्तर प्रदेश को भी रोज़गार देता है। कई औद्योगिक नगरों के विपरीत, जो अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि से कट जाते हैं, काशीपुर ने कृषि से अपना नाता बनाए रखा है — यहाँ कृषि-प्रसंस्करण और विनिर्माण परस्पर सहअस्तित्व में फैले हैं, एक-दूसरे को हटाए बिना।

आज का काशीपुर एक जीवंत नगर है, जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और उद्योग साथ-साथ फलते-फूलते हैं। दिल्ली, देहरादून, मुरादाबाद, रुद्रपुर और कुमाऊँ की पहाड़ियों से इसकी बेहतर होती कनेक्टिविटी इसे एक क्षेत्रीय विकास-केंद्र के रूप में और मज़बूत करती है। पर तेज़ शहरीकरण के बीच भी इसकी पुरानी पहचान कहीं दूर नहीं गई है — द्रोण सागर और मोटेश्वर महादेव मंदिर (जिसे भीम शंकर भी कहा जाता है, और जहाँ महाशिवरात्रि व चैती मेले के अवसर पर बड़ी भीड़ जुटती है) में, भीम गजा के पुरातात्विक अवशेषों में, और उन वार्षिक उत्सवों में, जो आज भी नगर की पौराणिक-धार्मिक परम्पराओं से जुड़े हैं।

समकालीन काशीपुर की सबसे उल्लेखनीय संस्थाओं में एक है — भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) काशीपुर। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के तहत भारत सरकार द्वारा स्थापित यह दूसरी पीढ़ी का आईआईएम 2011 में अस्तित्व में आया — इसकी आधारशिला 29 अप्रैल 2011 को रखी गई, और शुरुआती वर्षों में इसे आईआईएम लखनऊ का मार्गदर्शन मिला। जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान से लगभग 25 किलोमीटर दूर फैले 200 एकड़ के परिसर में, और सौ से अधिक औद्योगिक इकाइयों के घने जाल के बीच स्थित यह संस्थान अब पूर्णकालिक और कार्यकारी एमबीए कार्यक्रमों के साथ-साथ डॉक्टरेट शोध का भी राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता-प्राप्त केंद्र बन चुका है।

यह परिसर केवल एक शैक्षणिक पता भर नहीं है — यह काशीपुर के उस सफ़र का प्रतीक है, जो प्राचीन काल के व्यापारिक-ज्ञान केंद्र से आज के ज्ञान-अर्थव्यवस्था वाले शहर तक पहुँचा है। तराई के प्राकृतिक परिवेश के बीच बसा यह संस्थान इस क्षेत्र की ऐतिहासिक विरासत को नेतृत्व, उद्यमिता और सतत विकास की समकालीन सोच से जोड़ता है।

आईआईएम काशीपुर की वास्तुकला इस क्षेत्र के ऐतिहासिक चरित्र को सूक्ष्म ढंग से प्रतिबिंबित करती है। खुली ईंटों की बनावट, बलुआ पत्थर की बनावट वाली सतहें, आँगन, मेहराबदार प्रवेश-द्वार, छायादार गलियारे और आपस में जुड़े शैक्षणिक भवन — ये सब प्राचीन बस्तियों और भारत की पारंपरिक शिक्षण-संस्थाओं की स्थापत्य-भाषा की याद दिलाते हैं। खुले आँगनों पर दिया गया जोर ऐतिहासिक नगरों की सामुदायिक स्थानिक-योजना का स्मरण कराता है, जबकि परिवेश के साथ परिसर का घुला-मिला रूप तराई की उस पारिस्थितिक संवेदनशीलता को दर्शाता है, जो इस भूभाग की पहचान रही है। परिसर के भवनों के नामकरण में भी यही ऐतिहासिक चेतना झलकती है — इनमें से कई नाम नगर के बौद्ध अतीत और प्राचीन गोविषाण से जुड़े स्थलों की स्मृति से प्रेरित हैं, जिससे वास्तुकला और नामकरण दोनों मिलकर काशीपुर की सांस्कृतिक कड़ी को आगे बढ़ाते हैं। अकादमिक परिसर का 'विहार' नामकरण इस ऐतिहासिक स्मृति को और स्पष्ट करता है और आधुनिक शिक्षण-स्थल को प्राचीन ज्ञान-परंपरा से एक सांकेतिक संबंध प्रदान करता है।

यह परिसर केवल आधुनिक भवनों का समूह बनकर नहीं रह जाता — यहाँ इतिहास, जलवायु और संस्कृति मिलकर समकालीन डिज़ाइन को दिशा देते हैं। नतीजा एक ऐसी स्थापत्य-अभिव्यक्ति है, जो काशीपुर की बहुस्तरीय पहचान से गूँजती है — एक प्राचीन नगर, जो लगातार स्वयं को नए सिरे से गढ़ता रहा है।

काशीपुर की कहानी प्रतिस्थापन की नहीं, निरंतरता की कहानी है। तराई पर कभी छाए रहे घने वन उपजाऊ खेतों में बदल गए, पर उनका पारिस्थितिक महत्व मिटा नहीं। प्राचीन गोविषाण एक फलते-फूलते व्यापारिक नगर में विकसित हुआ, फिर भी अपने बौद्ध विहारों और पौराणिक स्मृतियों को साथ लिए रहा। चन्द शासकों, गोरखा-अंग्रेज़ संघर्ष में उलझी तराई की सीमा, सिख बसने वालों, विभाजन के शरणार्थियों, औद्योगिक उद्यमियों और अब एक राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान — इन सबने बारी-बारी से इस नगर की लंबी कथा में एक नया अध्याय जोड़ा है।

आज काशीपुर इतिहास, प्रकृति, कृषि, उद्योग और उच्च शिक्षा के संगम पर खड़ा है। सातवीं शताब्दी में ह्वेनसांग द्वारा वर्णित गोविषाण से लेकर चन्द शासन, गोरखा-अंग्रेज़ संघर्ष, कृषि-पुनर्वास और औद्योगिक विकास तक, इस नगर ने समय के साथ अनेक रूप धारण किए हैं। आज यहाँ आधुनिक उद्योग और उच्च शिक्षा के संस्थान उसी भूभाग में खड़े हैं, जहाँ कभी व्यापार, आस्था और ज्ञान के प्राचीन केंद्र फले-फूले थे। काशीपुर का यह सफ़र हमें बताता है कि इतिहास केवल अतीत में सुरक्षित कोई स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान को आकार देने वाली एक सतत प्रक्रिया है। यहाँ परिवर्तन हुआ है, पर अतीत मिटा नहीं; नए अध्याय जुड़े हैं, पर पुरानी कथा टूटी नहीं। काशीपुर की वास्तविक पहचान इसी निरंतरता में है—एक ऐसा नगर, जो अपने अतीत को पीछे छोड़कर नहीं, उसे साथ लेकर लगातार अपने नए रूप गढ़ता रहा है।

सम्पादकीय समिति की ओर से पाठकों को सादर समर्पित।



हरीश गिरि

प्रभारी फायर/सेफ्टी

उत्तराखंड के लिए वरदान, भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि, “शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करती है, यह मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ सामाजिक प्राणी बनने में सहायक होती है।” इसी क्रम में एक अन्य विद्वान और शिक्षाविद् ने कहा था कि, “शिक्षा मनुष्य के जन्मजात शक्तियों का प्राकृतिक सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील विकास है।”

अतएव उपर्युक्त विद्वानों के विचारों का मूल्यांकन करें तो शिक्षा से ही मानव का चहुँमुखी विकास संभव है। ऐसे ही उच्च लक्ष्यों के दृष्टिगत उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा के लिए भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर की स्थापना की गई है।

यह उत्तराखंड के शिवालिक पर्वत मालाओं की तलहटी पर स्थित धन-धान्य से परिपूर्ण तथा प्राकृतिक संपदा से भरपूर उधम सिंह नगर जिले के काशीपुर तहसील के कुंडेश्वरी कस्बे में स्थापित है। यह चारों ओर से प्राकृतिक सौंदर्य से आच्छादित है। इसके एक छोर पर विश्व प्रसिद्ध कॉर्बेट नेशनल पार्क है तो दूसरे छोर पर विश्व विख्यात पर्यटन नगरी नैनीताल है।

संस्थान स्वयं ही नैसर्गिक सुंदरता से ओत-प्रोत है। इसके प्रवेश द्वार से ही प्रशासनिक भवन का विहंगम दृश्य सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है। मुख्य द्वार पर सतर्क प्रहरी स्वागतोत्सुक तथा सुरक्षा के लिए हर पल तत्पर रहते हैं। प्रवेश द्वार से ही आगंतुक की जिज्ञासा और कौतूहल निर्मित हो जाता है। मार्ग के दोनों ओर विभिन्न प्रकार की औषधीय वृक्ष तथा फूलों से लदे पौधे आगंतुकों के स्वागत के लिए आकुल-व्याकुल हैं।

जिज्ञासु के कदम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते हैं, उसकी आतुरता और भी घनीभूत हो जाती है। फिर उसका यहाँ आगमन यहाँ के भवनों की बनावट, शैक्षणिक वातावरण, छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा, विषय के मर्मज्ञ एवं विद्वान प्राध्यापक, विशाल तथा आधुनिक पुस्तकालय आदि को देखकर उसे प्राचीन भारत की सभ्यता कहे जाने वाले तक्षशिला तथा नालंदा जैसे ख्यातिनाम विश्वविद्यालयों एवं उत्तराखंड की ऐतिहासिक वास्तुकला का स्मरण हो आता है। अतएव वे यहाँ आकर गौरव की अनुभूति करते हैं।

संस्थान का कुशल एवं दूरदर्शी नेतृत्व: किसी भी संस्थान को संचालित करने तथा उसके उत्तरोत्तर विकास के लिए दूरदर्शी एवं कुशल नेतृत्व की आवश्यकता होती है, जो सौभाग्य से यहाँ पर उपस्थित है। ऐसा असंभव सा कार्य शीर्ष नेतृत्व के भागीरथ प्रयासों से ही संभव हो रहा है। ऐसा शब्दों से नहीं अपितु परिणाम से देखा व जाना जा सकता है। हमारी योग्यता, गुणवत्ता से सुधरती रैंकिंग यह बताती है कि सक्षम नेतृत्व बातों में नहीं अपितु काम में विश्वास करता है। विगत की रैंकिंग को पीछे छोड़ते हुए हम लगातार अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार के फलस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर हमारी 23वीं रैंक है। यह हमें बताता है कि संस्थान को **टॉप टू बॉटम** तक किस प्रकार कुशल नेतृत्व रूपी ऊर्जा से आगे बढ़ाया जा रहा है। अतएव छात्रों की संख्या में जादुई बढ़ोतरी यह बताती है कि संस्थान भविष्य में अपने उच्चकोटि के प्रदर्शन से सर्वश्रेष्ठ स्थान पर आने में कोई संदेह नहीं है। अतएव संस्थान का नेतृत्व कुशल हाथों में है और इसका भविष्य उज्ज्वल है।

श्रेष्ठ एवं कुशल प्राध्यापक: संस्थान में श्रेष्ठ एवं कुशल प्राध्यापक अपने ज्ञान कौशल से संस्थान की ऊँचाइयों को चार चाँद लगा रहे हैं। यहाँ पर अर्थशास्त्र एवं वित्त के मर्मज्ञ, विख्यात गणितज्ञ और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय विषयों के विशेषज्ञ अपने ज्ञान, कौशल तथा दीर्घकालीन अध्यापन के अनुभव से छात्र-छात्राओं को अपने अध्यापन का लाभ देकर देश-दुनिया में अपनी योग्यता का परचम लहरा रहे हैं।

अतएव छात्र-छात्राओं को प्रबंधकीय ज्ञान से सराबोर कर, आधुनिक भारत के लिए युवाओं को तैयार कर देश-विदेश में भारत का नाम रोशन कर रहे हैं तथा विजन 2047 के लिए युवाओं के सपने साकार करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

चैत्या पुस्तकालय: एक ऐसा पवित्र एवं ज्ञानवर्धक स्थल जहाँ गहन ज्ञान प्राप्त कर अज्ञान के अंधेरे को दूर किया जाता है। किसी संस्थान को ज्ञान की ऊर्जा से संचालित करने के लिए व्यापक और विशाल पुस्तकालय की आवश्यकता होती है। ऐसी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए यहाँ पर आधुनिक साज-सज्जा से परिपूर्ण विशाल पुस्तकालय की स्थापना की गई है। विश्व के जाने-माने अर्थशास्त्रियों की विख्यात रचनाओं, प्रबंधकीय विशेषज्ञों के श्रेष्ठ आलेखों के अलावा विभिन्न विषयों की पुस्तकों का संसार मिलता है तथा आधुनिक युग में डिजिटल माध्यम से भी यहाँ अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गई है। इसके लिए संस्थान ने विद्वानों के अथक प्रयासों एवं दूर दृष्टि व कुशल मार्गदर्शन तथा दिन-रात की मेहनत के फल स्वरूप राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले दैनिक घटनाक्रम की खबरों से संस्थान के सभी छात्रों, सदस्यों को अधतन करते हैं कहा जाता है कि 'विद्यादान महादान' इन्ही शब्दों को साकार करते हुए संस्थान के द्वारा जिले के विभिन्न निजी प्रबंधन संस्थानों के विद्यार्थियों को भारी संख्या में यहां से पुस्तकों को उनके ज्ञानकौशल में वृद्धि करने के लिए भेंटस्वरूप प्रदान किया जाता है इससे अन्य संस्थाओं के छात्र भी लाभान्वित होते हैं तथा राज्य के अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों को प्रत्यक्ष लाभ होता है

नवाचार एवं उद्यमिता केंद्र (FIED विभाग):

संस्थान एवं भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सहयोग से FIED विभाग की स्थापना की गई है, जिसका कार्य नवाचार एवं उद्यमशीलता को बढ़ावा देना है। युवा उद्यमियों को प्रशिक्षण उचित मार्गदर्शन तथा आर्थिक सहायता देकर उन में उद्यमशीलता चलता की भावना को बढ़ावा देना है। जिसके फलस्वरूप स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा होंगे और स्थानीय बाजार को बढ़ावा मिलेगा, रोजगार की समस्या का एक सीमा तक समाधान व पलायन की रोकने में मदद मिलेगी। संस्थान की इस इकाई में भारत सरकार एवं राज्य सरकार की विविध योजनाओं जैसे राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देना आदि भी सम्मिलित है।

सक्षम प्लेसमेंट विभाग:

शिक्षा प्राप्ति के बाद एक युवा के सामने नौकरी पाने की बड़ी चुनौती होती है। भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर ने छात्रों को ऐसे हालातों का सामना करने के लिए एक सक्षम प्लेसमेंट इकाई की स्थापना कर उनके सामने खड़ी रोजगार की गंभीर समस्या का निदान किया है। यहां पर भारत ही नहीं अपितु विदेशों से भी जानी-मानी कंपनियां आती हैं, जो एक साक्षात्कार के माध्यम से छात्रों को आकर्षक वेतन पैकेजों पर उनका चयन कर इस गंभीर समस्या का समाधान करती हैं

अनुभवी प्रशासनिक कार्मिक:

जिस प्रकार सही समय देने के लिए एक घड़ी अपने विभिन्न कलपुर्जों पर निर्भर रहती है उसी प्रकार इस संस्थान को संचालित करने लिए विभिन्न विभागों को आपसी ताल-मेल, कार्य कुशलता, सहयोग से संस्थान को गति मिलती है और यह अपने-अपने क्षेत्र के कार्यों को समयबद्ध रूप से संपादित कर दिन-प्रतिदिन संस्थान को गतिशील बनाए रखते हैं। यह सभी विभाग / इकाइयाँ एक-दूसरे से अन्योन्याश्रित रूप से जुड़े होने के कारण अपनी कार्यप्रणाली से संस्थान को तीव्रगति देते हैं। एक के बिना किसी दूसरे विभाग की कल्पना करना असंभव है अतएव किसी एक की तुलना में दूसरी शाखा / इकाई को कमतर नहीं आंका जा सकता है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर, उत्तराखंड जैसे छोटे हिमालयी राज्य के लिए एक वरदान साबित हो रहा है क्योंकि इसकी स्थापना से स्थानीय लोगों को रोजगार एवं उच्च व्यावसायिक शिक्षा का प्रसार, उत्तराखंड के छात्रों के लिए प्रबंधन की शिक्षा उनके ही प्रदेश में उपलब्ध हो जाना, स्थानीय प्रतिभाशाली उद्योगपतियों को रोजगार सृजन के लिए आर्थिक सहायता देना स्थानीय कृषि एवं किसान कल्याण के लिए समय-समय पर केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का संचालन करने से उनका प्रत्यक्ष / परोक्ष लाभ मिलने के साथ – साथ उत्तराखंड राज्य को भविष्य में भी दीर्घकालीन लाभ होना निश्चित है। इसलिए भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर उधम सिंह नगर, उत्तराखंड के लिए वरदान साबित हो रहा है।



सारिका चौहान

(एमबीएए 25057)

प्रेमचंद से प्रोग्रामिंग तक: परिवर्तन के साथ कदमताल

(परिवर्तनशील विश्व में ज्ञान,
नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व)

एक समय था जब समाज की आत्मा शब्दों में बसती थी। कलम केवल कथा नहीं लिखती थी, वह युग का सत्य लिखती थी। उसी समय मुंशी प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य को नई दिशा दी। उन्होंने कथा को कल्पना के महलों से निकालकर जीवन की धूल-धूप में उतारा। किसान, स्त्री, श्रमिक और वंचित; सब उनके रचना संसार के केंद्र बने। यह केवल लेखन नहीं था, यह साहित्यिक नेतृत्व था।

लगभग तीन दशकों की रचनात्मक यात्रा में उन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य की काया बदल दी। सेवासदन से लेकर गोदान तक उनकी दृष्टि निरंतर विकसित होती रही। वे स्थिर नहीं रहे। उन्होंने समय को पढ़ा, समाज को देखा, अनुभव को शब्द दिया और हर रचना के साथ स्वयं को भी बदला। यही उनकी शक्ति थी, केवल ज्ञान नहीं, सजग अवलोकन, कौशल और निरंतर आत्म-विकास।

आज समय फिर बदल रहा है। अब कलम के साथ-साथ संगणना और कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी हमारे युग की रचना कर रही है। निर्णयों में आँकड़ों की भूमिका बढ़ रही है, सृजन में यांत्रिक सहयोग संभव हो गया है। ऐसे में भय स्वाभाविक है: क्या मनुष्य पीछे छूट जाएगा?

पर इतिहास सिखाता है, परिवर्तन से भागना समाधान नहीं होता। जब छपाई आई, तब भी आशंका थी; जब दूरसंचार आया, तब भी संशय था। पर हर युग में मनुष्य ने साधनों को साधा है, उनसे हार नहीं मानी।

प्रेमचंद का उदाहरण हमें यह सिखाता है कि उत्कृष्टता एक ही प्रयास में नहीं मिलती। वे हर रचना के साथ स्वयं को निखारते गए। सीमित साधनों, साधारण जीवन और संसाधनों की कमी के बावजूद उन्होंने यथार्थ को ऐसी ऊँचाई दी वो आज भी जीवित है। उनका विकास अचानक नहीं हुआ; वह निरंतर अभ्यास, अवलोकन और आत्म-संशोधन का परिणाम था। उन्होंने सिद्ध किया कि बदलती दुनिया में श्रेष्ठता संसाधनों से नहीं, बल्कि सीखते रहने की जिज्ञासा और अपने कौशल को निरंतर परिष्कृत करने से आती है। यदि वे लिखकर रुक जाते, तो वे साधारण लेखक रह जाते; पर उन्होंने हर रचना को अगली सीढ़ी बनाया। यही उनकी असली शक्ति थी।

आज हमारे पास वे साधन हैं जिनकी कल्पना भी उस समय नहीं की जा सकती थी। ज्ञान के स्रोत खुले हैं, सीखने के अवसर असीमित हैं, और नई तकनीकें हमारे हाथों में हैं। परंतु साधन ही पर्याप्त नहीं होते। प्रश्न यह है क्या हम उनमें निपुण होने का धैर्य रखते हैं? क्या हम अपने कार्य को हर प्रयास के साथ बेहतर बनाने का संकल्प रखते हैं? प्रेमचंद ने दिखाया कि उत्कृष्टता सुविधा से नहीं, निरंतर अभ्यास और सजग दृष्टि से जन्म लेती है। यदि उन्होंने सीमित परिस्थितियों में साहित्य को नई ऊँचाई दी, तो आज का युवा भी अपने कौशल को निरंतर विकसित कर नई दिशाएँ गढ़ सकता है।

“प्रेमचंद से प्रोग्रामिंग तक” की यह यात्रा हमें यही संदेश देती है कि परिवर्तन से भयभीत होना नहीं, उससे संवाद करना सीखना है। सीखना, सुधारना और आगे बढ़ना ही सच्ची कदमताल है। साधन बदलते रहेंगे, पर सीखने की जिज्ञासा और स्वयं को निखारने की प्रवृत्ति ही मनुष्य को नेतृत्व देती है। भविष्य उसी का है जो रुकता नहीं, हर नए युग में स्वयं को और अधिक सक्षम बनाता है।

परिवर्तन अवश्यंभावी है। प्रश्न केवल इतना है—क्या हम उसके पीछे चलेंगे, या उसके साथ कदमताल करेंगे?



जेरीन जोस्सी
(MBA24035)

बदलती दुनिया में युवा नेतृत्व की भूमिका

आज की दुनिया तेजी से बदल रही है। तकनीक, पर्यावरणीय चुनौतियाँ, वैश्विक आर्थिक उतार-चढ़ाव और सामाजिक परिवर्तन हमारे समय की वास्तविकताएँ हैं। ऐसे दौर में केवल नीतियाँ बनाना पर्याप्त नहीं है; समाज को सही दिशा देने के लिए संवेदनशील, जिम्मेदार और दूरदर्शी नेतृत्व की आवश्यकता है। इस परिवर्तनशील विश्व में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि युवा न केवल परिवर्तन को समझते हैं, बल्कि उसे अपनाकर आगे बढ़ने की क्षमता भी रखते हैं।

युवा नेतृत्व का अर्थ केवल पद या अधिकार प्राप्त करना नहीं है, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व को समझते हुए निर्णय लेना है। कॉलेज जीवन में समूह परियोजनाओं, प्रतियोगिताओं और क्लब गतिविधियों के माध्यम से जो अनुभव मिलता है, वही वास्तविक नेतृत्व की नींव रखता है। इन अनुभवों से यह सीख मिलती है कि टीम के साथ मिलकर काम करना, मतभेदों को सुलझाना और सीमित संसाधनों में समाधान निकालना कितना आवश्यक है। बदलती दुनिया में युवा तकनीक का उपयोग केवल सुविधा के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए भी कर सकते हैं, जैसे डिजिटल माध्यमों से शिक्षा और जानकारी को दूर-दराज़ तक पहुँचाना।

हालाँकि, तकनीकी दक्षता के साथ-साथ नैतिक समझ भी आवश्यक है। केवल तेजी से आगे बढ़ना ही नेतृत्व नहीं है; सही दिशा में आगे बढ़ना ही सच्चा नेतृत्व है। युवा नेताओं को यह समझना होगा कि उनके निर्णयों का प्रभाव समाज के कमजोर वर्गों पर भी पड़ता है। यदि विकास कुछ लोगों तक सीमित रह जाए, तो असमानता बढ़ती है। इसलिए नेतृत्व का उद्देश्य समावेशी विकास होना चाहिए, जहाँ अवसर सभी तक पहुँचें।

बदलती दुनिया में युवा नेतृत्व की एक बड़ी चुनौती अनिश्चितता है। भविष्य को लेकर स्पष्टता न होने पर भी साहस के साथ आगे बढ़ना, सीखते रहना और गलतियों से सुधार करना नेतृत्व का आवश्यक गुण है। यदि कोई योजना अपेक्षा के अनुसार सफल नहीं हुई, तो वही अनुभव सिखाता है कि असफलता से सीखना ही युवा नेतृत्व को मजबूत बनाता है। शैक्षणिक संस्थानों में केस स्टडीज़, समूह चर्चाएँ और सामाजिक परियोजनाएँ युवाओं को वास्तविक जीवन की जटिलताओं से परिचित कराती हैं। इन गतिविधियों से निर्णय लेने की क्षमता, संवाद कौशल और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व युवा नेतृत्व का मूल आधार है। पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, डिजिटल साक्षरता और सामुदायिक विकास जैसे क्षेत्रों में युवाओं की भागीदारी समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव की शुरुआत बन सकते हैं, जैसे स्वच्छता अभियानों में भाग लेना, शिक्षा से जुड़े स्वयंसेवी कार्य करना या पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाना। जब युवा अपने आस-पास की समस्याओं को समझकर पहल करते हैं, तो नेतृत्व व्यवहार में उतरता है।

अंततः, बदलती दुनिया में युवा नेतृत्व ज्ञान, जिम्मेदारी और साहस का संतुलन है। यदि युवा अपने विचारों और कर्मों में संवेदनशीलता बनाए रखें, तो वे परिवर्तन को समाज के कल्याण का माध्यम बना सकते हैं। यही समय है जब युवा अपने छोटे प्रयासों से भी बड़े परिवर्तन की नींव रखें और एक अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और सशक्त समाज के निर्माण में योगदान दें।



मोहम्मद शाहनवाज़

प्रशासनिक सहयोगी (पीएच.डी.
कार्यालय)

परिवर्तनशील विश्व में ज्ञान, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व

आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, वह मानव इतिहास का सबसे तीव्र और परिवर्तनशील दौर है। तकनीक, जलवायु परिवर्तन और भू-राजनीतिक समीकरणों ने दुनिया की परिभाषा बदल दी है। ऐसे में, किसी भी संस्थान या राष्ट्र की प्रगति तीन प्रमुख स्तंभों पर टिकी है: **ज्ञान, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व।**

ज्ञान: सूचना से विवेक की ओर पारंपरिक रूप से ज्ञान का अर्थ सूचनाओं का संग्रह माना जाता था, लेकिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा के इस युग में ज्ञान का स्वरूप बदल गया है। अब ज्ञान का अर्थ केवल “क्या” जानना नहीं, बल्कि “क्यों” और “कैसे” को समझना है। परिवर्तनशील विश्व में वही ज्ञान सार्थक है जो समस्याओं का समाधान कर सके और नवाचार को बढ़ावा दे। आज हमें ऐसे ज्ञान की आवश्यकता है जो तकनीकी दक्षता के साथ-साथ मानवीय मूल्यों को भी संरक्षित रखे।

नेतृत्व: अनुकूलन और दूरदर्शिता बदलते परिवेश में नेतृत्व की परिभाषा भी बदली है। अब एक नेता वह नहीं है जो केवल आदेश दे, बल्कि वह है जो अनिश्चितताओं के बीच भी सकारात्मक दिशा दिखा सके। 21वीं सदी का नेतृत्व “अनुकूलनशीलता” और “परानुभूति” की मांग करता है। चाहे वह कॉर्पोरेट जगत हो या सामाजिक संस्थाएँ, सफल नेतृत्व वही है जो बदलावों से डरने के बजाय उन्हें अवसरों में बदल दे और अपनी टीम को साथ लेकर चले।

सामाजिक उत्तरदायित्व: सफलता का असली पैमाना ज्ञान और नेतृत्व तब तक अधूरे हैं जब तक उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव न हो। सतत विकास आज की सबसे बड़ी जरूरत है। एक जिम्मेदार नागरिक और पेशेवर होने के नाते, हमारा कर्तव्य है कि हम अपने कार्यों के प्रभाव को समझें। क्या हमारे निर्णय पर्यावरण के अनुकूल हैं? क्या हमारी प्रगति में समाज के वंचित वर्ग का भी हित शामिल है? यह प्रश्न ही भविष्य की दिशा तय करेंगे।

निष्कर्ष- भारतीय प्रबंध संस्थान जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों का विज़न हमेशा से ऐसे नेतृत्व कर्ता तैयार करना रहा है जो न केवल व्यवसाय में कुशल हों, बल्कि समाज के प्रति भी संवेदनशील हों।

इस परिवर्तनशील विश्व में, जब हम ज्ञान को नेतृत्व के साथ और नेतृत्व को सामाजिक दायित्व के साथ जोड़ते हैं, तभी हम एक बेहतर और समावेशी भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।



आशीष श्रीवास्तव

प्रशासनिक सहायक

मानव-निर्मित कृत्रिम बुद्धिमत्ता : परिवर्तनशील विश्व का गतिशील पहिया

आज के तकनीक-प्रधान विश्व में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक अत्यंत आवश्यक, प्रभावशाली और उपयोगी संसाधन बन चुका है। हम अपने दैनिक जीवन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसी तकनीक से घिरे हुए हैं। यह मनुष्य के सहायक के रूप में अपनी भूमिका अत्यंत कुशलता से निरंतर निभा रहा है। इसने मानव जीवन के विविध क्रियाकलापों को इतना सरल, तीव्र और सुव्यवस्थित बना दिया है कि यह किसी चमत्कार से कम प्रतीत नहीं होता।

प्रगतिशील युग में विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता साथ मिलकर चिकित्सा, शिक्षा, रक्षा, कृषि, उद्योग तथा नवाचार के क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन ला चुके हैं। चिकित्सा क्षेत्र में रोगों की शीघ्र पहचान, सटीक निदान तथा रोबोटिक सर्जरी जैसी सुविधाएँ संभव हुई हैं। शिक्षा में व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning) के माध्यम से विद्यार्थियों की क्षमता के अनुरूप अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। उद्योगों में स्वचालन (Automation) ने उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि की है।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल निर्देशों का पालन करने तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह उपलब्ध आँकड़ों और तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निर्णय लेने में भी सक्षम हो चुका है। यह मनुष्य को सर्वोत्तम विकल्प सुझाकर जटिल समस्याओं के समाधान में सहायक बन रहा है। प्रशासन, वित्तीय प्रबंधन, मौसम पूर्वानुमान तथा आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में भी यह अपनी उपयोगिता सिद्ध कर चुका है।

साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव के साथ नैतिकता, गोपनीयता और रोजगार जैसे विषयों पर गंभीर चिंतन भी आवश्यक हो गया है। तकनीक का विवेकपूर्ण और मानवीय मूल्यों के अनुरूप उपयोग ही इसे वास्तव में मानवता के हित में सिद्ध कर सकता है।

निष्कर्षतः, कृत्रिम बुद्धिमत्ता परिवर्तनशील विश्व का वह गतिशील पहिया बन चुका है, जो विकास की गति को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान कर रहा है। यदि इसे संतुलित, नैतिक और उत्तरदायी दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाए, तो यह मानव सभ्यता के उत्कर्ष का सशक्त माध्यम सिद्ध हो सकता है।



गिरीश चंद्र शर्मा

अकादमिक सहायक, विपणन विभाग

डिजिटल मीडिया एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में शिक्षा का बदलता स्वरूप

“भारत फरवरी 2026 में एआई इम्पैक्ट समिट में दुनिया का स्वागत करने के लिए उत्सुक है। हमने ‘सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय’ यानी सभी के लिए कल्याण, सभी के लिए सुख का विषय चुना है।”

— श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का वैश्विक केंद्र बनने की दिशा में बढ़ता हुआ भारत आज विश्व में अपनी एक विशेष पहचान स्थापित कर चुका है। भारत सरकार द्वारा इस दिशा में सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं एवं आवश्यक योजनाओं पर भी कार्य किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है जिसके माध्यम से मशीनों को मानव की तरह समस्या का समाधान करने के लिए सक्षम बनाया जाता है। जनरेटिव एआई के माध्यम से टेक्स्ट को इमेज, ऑडियो व वीडियो फॉर्मेट में परिवर्तित किया जा रहा है। इसमें नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) और मशीन लर्निंग की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज डिजिटल क्रांति का युग है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डिजिटल मीडिया ने आज प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है और यह परिवर्तन समाज व शिक्षा व्यवस्था पर व्यापक रूप से प्रभाव डाल रहा है। आज कई कंपनियाँ चैटबॉट के माध्यम से ग्राहक सेवा प्रदान कर रही हैं एवं ग्राहकों की समस्याओं का निवारण किया जा रहा है।

आज तकनीकी युग में डिजिटल तकनीक एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा के विकास क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई है। पारंपरिक कक्षाओं का स्थान अब वर्चुअल कक्षाओं ने ले लिया है और शिक्षा प्रणाली स्मार्ट हो चुकी है। शिक्षा का वैश्वीकरण हो गया है और ज्ञान तक सभी लोगों की आसान पहुँच संभव हो गई है।

इससे एक ओर जहाँ स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ रही है, वहीं ऑनलाइन शिक्षा और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का विशेष रूप से महत्व भी बढ़ गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डिजिटल टेक्नोलॉजी के आने से शिक्षा को बहुत ही साधारण, सरल, व्यापक और आसान बना दिया गया है। यह परिवर्तन केवल शिक्षा की पद्धति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के लिए भी इसको सीखने के तरीके इसके स्वरूप एवं विद्यार्थियों की सोच और समझ को भी विशेष रूप से प्रभावित करता है।

आज विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए अनेक प्रकार की अध्ययन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। विद्यार्थी जटिल प्रश्नों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर आसानी से समझ और हल कर पा रहे हैं।

अध्ययन एवं प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी एवं सरल बनाने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्वपूर्ण योगदान है। वहीं दूसरी ओर, शोध और डिजिटल तकनीक का विशेष योगदान के कारण अध्ययन सामग्री तैयार करने में भी डिजिटल मीडिया एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है।

एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में भारत के नीति आयोग के पूर्व सीईओ **अमिताभ कांत** ने कहा कि भारत एआई को अमेरिका से लगभग 33% अधिक डेटा दे रहा है, इसलिए भारत को उसमें अपना स्वदेशी एलएलएम मॉडल विकसित करने की दिशा में कार्य करना होगा। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, भारत में चैटजीपीटी के साप्ताहिक सक्रिय उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग

10 करोड़ को पार कर चुकी है, जिसमें सबसे अधिक संख्या भारतीय छात्रों की है। इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट का मुख्य उद्देश्य यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग सबके लाभ के लिए होना चाहिए। भविष्य में एआई के माध्यम से शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, विज्ञान, यातायात प्रबंधन, तकनीक आदि क्षेत्रों में और भी परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

आधुनिक शिक्षा के इस युग में डिजिटल तकनीक के दुरुपयोग की भी संभावना है, जिससे कई प्रकार की चुनौतियाँ का सामना करना पड़ रहा है। इस दिशा में हमें सार्थक कदम उठाने की आवश्यकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण जहाँ एक ओर कई अवसरों में बढ़ोतरी हुई है, वहीं चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। हमें इस तकनीक का उपयोग समाज के नैतिक विकास एवं मूल्यों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए, ताकि हम एक जिम्मेदार और शिक्षित समाज का निर्माण कर सकें।



डॉ. मोहम्मद आसिफ
मुस्तफा खान
पुस्तकालयाध्यक्ष

एआई : सुविधा, संभावना और चुनौती

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि विगत एक दशक से वर्तमान युग को तकनीकी क्रांति का युग कहा जा रहा है। जिस प्रकार मानव सभ्यता ने पत्थर के औजारों से लेकर आधुनिक कंप्यूटरों तक की लंबी यात्रा तय की है, उसी क्रम में **कृत्रिम बुद्धिमत्ता** मानव विकास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में उभरकर सामने आई है।

एआई को मानव सोच का डिजिटल विस्तार कहना इसलिए उचित प्रतीत होता है, क्योंकि यह मानव की निर्णय-क्षमता, सीखने की प्रवृत्ति तथा समस्या-समाधान कौशल को तकनीकी माध्यम से साकार करती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आज के युग की सबसे प्रभावशाली एवं परिवर्तनकारी तकनीकों में से एक बन चुकी है। इसने न केवल कार्य-प्रणालियों को सरल बनाया है, बल्कि भविष्य की असीम संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं। साथ ही, इसके साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जिन पर विचार किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

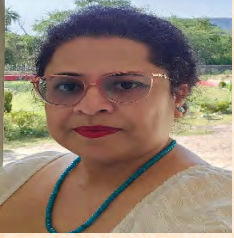
एआई द्वारा प्रदान की गई सुविधाएँ आज हमारे दैनिक जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। स्मार्ट उपकरणों से लेकर स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, बैंकिंग, कृषि और प्रशासन तक—लगभग प्रत्येक क्षेत्र में एआई ने कार्यों को अधिक तेज, सटीक एवं कुशल बनाया है। रोगों की शीघ्र पहचान, ऑनलाइन सेवाओं का स्वचालन, डेटा-आधारित निर्णय-निर्माण तथा व्यक्तिगत उपयोगकर्ता अनुभव जैसी सुविधाएँ एआई की उपयोगिता को प्रमाणित करती हैं।

संभावनाओं की दृष्टि से कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव समाज को नई दिशा प्रदान कर सकती है। यह तकनीक ज्ञान के प्रसार को अधिक सुलभ बनाकर शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर उपलब्ध करा सकती है। औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में नवाचार को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ एआई नेतृत्व क्षमता को भी अधिक प्रभावी बना सकती है।

हालाँकि, तकनीक के तीव्र विस्तार के साथ कुछ चिंताएँ भी उत्पन्न हो रही हैं। बीसवीं सदी में जहाँ मनुष्य अभवों के कारण संघर्ष करता हुआ दिखाई देता था, वहीं आने वाला दशक तकनीकी संतुलन की दृष्टि से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। तकनीक के अत्यधिक और तेज़ी से प्रसार के संदर्भ में भारतीय संस्थानों—जैसे शिक्षा एवं औद्योगिक जगत के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे एआई के उपयोग हेतु उचित नीतिगत उपायों पर गंभीरतापूर्वक विचार करें।

आज एआई तकनीक के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्य की स्वयं सीखने और समझने की क्षमताओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका व्यक्त की जा रही है, जो मानवीय भविष्य के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

अंततः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य में चाहे जितनी भी उन्नति कर ले, उसमें मानवीय संवेदनाएँ, विवेक, समझ तथा नैतिक मूल्य समाहित नहीं हो सकते। मानव जीवन के दैनिक कर्तव्यों और भावनात्मक पक्ष की जो कमी है, उसे एआई द्वारा पूर्णतः प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता।



प्रो. देवजानी चटर्जी

(संगठनात्मक व्यवहार और
मानव संसाधन)

नेतृत्व का प्रथम पाठ: घर, हरियाली और मानवता

एक परिवर्तनशील विश्व में—जहाँ तकनीकी तीव्रता, जलवायु संकट और सामाजिक जटिलताएँ निरंतर बढ़ रही हैं—प्रगति का वास्तविक माप केवल ज्ञान के संचय में नहीं, बल्कि उस नेतृत्व के चरित्र और उससे उपजी सामाजिक जिम्मेदारी में निहित है। ज्ञान यदि संवेदना से रहित हो तो निर्जीव हो जाता है, और नेतृत्व यदि नैतिकता से विहीन हो तो खोखला सिद्ध होता है। आज आवश्यकता ऐसे नेतृत्व की है जो समग्र, मानवीय और जीवन के साधारण व्यवहार में रचा-बसा हो—ऐसा नेतृत्व जो घर से प्रारम्भ होता है।

विलियम वर्ड्सवर्थ की पंक्ति हमें स्मरण कराती है—“Come forth into the light of things, let Nature be your teacher.” प्रकृति संतुलन, सह-अस्तित्व, धैर्य और पुनर्निर्माण का पाठ पढ़ाती है। नदी केवल अपने लिए नहीं बहती और वृक्ष केवल अपने लिए फल नहीं देते। प्रकृति के इस अनुशासन में हम सतत् नेतृत्व का सार देखते हैं। हरियाली से प्रेम करना, पौधों का संरक्षण करना, पशु-पक्षियों के साथ सह-अस्तित्व में जीना—यह भावुकता नहीं, बल्कि जागरूक उत्तरदायित्व है। जॉन कीट्स की पंक्ति—“A thing of beauty is a joy for ever,”—हमें स्मरण कराती है कि प्रकृति की सुंदरता केवल देखने के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने योग्य है।

नेतृत्व केवल कार्यालय या सभागारों में सीखी जाने वाली कला नहीं है; यह घर से आरम्भ होता है। एक माँ जो धैर्य और प्रेम से अपने बच्चों का मार्गदर्शन करती है, वह भविष्य की निर्माता है। दादा-दादी या नाना-नानी जो जीवन के सही और गलत का भेद सिखाते हैं, वे नैतिक दिशा प्रदान करने वाले नेता हैं। एक माली जो नन्हे पौधों को सींचता है, वह धैर्य और दूरदृष्टि का प्रतीक है। इन साधारण प्रतीत होने वाले कार्यों में गहन नेतृत्व निहित है।

नैतिक नेतृत्व समग्र दृष्टि पर केंद्रित होता है। यह केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय संतुलन की भी चिंता करता है। वृद्ध माता-पिता की सेवा करना, सड़क के पशुओं की देखभाल करना, गरीब और वंचितों की सहायता करना—ये दया के छोटे कार्य नहीं, बल्कि सच्चे नेतृत्व के संकेत हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति कम-से-कम एक वंचित बालक या बालिका की शिक्षा का दायित्व लेकर उसे उच्च शिक्षा तक पहुँचाने का संकल्प ले, तो यह केवल एक जीवन नहीं, बल्कि पूरे समाज की दिशा बदल सकता है। शिक्षा सशक्तिकरण का माध्यम है, और सशक्तिकरण आशा का विस्तार।

सच्चा नेतृत्व निष्पक्ष, सहानुभूतिपूर्ण और समावेशी होता है। यह सबके लिए अच्छा सोचता है और सामूहिक कल्याण के लिए कार्य करता है। अल्फ्रेड लॉर्ड टेनीसन की पंक्ति—“To strive, to seek, to find, and not to yield,”—हमें प्रेरित करती है कि हम नैतिक मूल्यों के मार्ग पर दृढ़ रहें।

अंततः, नेतृत्व पद या उपाधि का विषय नहीं, बल्कि जीवन जीने की शैली है। प्रकृति से प्रेम, सह-अस्तित्व का भाव, करुणा और पहल करने का साहस—यही सच्चे नेतृत्व के आधार हैं। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने घर और समुदाय में जिम्मेदारी का निर्वाह करता है, तब वही नेतृत्व व्यापक समाज को एक अधिक मानवीय और सतत भविष्य की ओर अग्रसर करता है।



ओमेंद्र यादव

(अकादमिक सहयोगी)

भूख

बात उस समय की है, जब मैं एक भवन निर्माण (कंस्ट्रक्शन) कंपनी में स्टोर इंचार्ज के पद पर कार्यरत था। वहाँ काम करते हुए मुझे लगभग पाँच वर्ष हो चुके थे। परंतु वेतन कम होने के कारण मैं किसी ऐसे दूसरे काम की तलाश में भी था, जहाँ मुझे इससे अधिक वेतन मिल सके।

हाल ही में मेरा विवाह हुआ था। शादी के बाद जिम्मेदारियाँ और ज़रूरतें, दोनों बढ़ गई थीं। कम वेतन में घर चलाना दिन-ब-दिन कठिन होता जा रहा था। नई-नई शादी हुई थी, इसलिए पत्नी के भी अपने सपने और इच्छाएँ थीं। वर्तमान कंपनी के वेतन से उन सपनों को पूरा कर पाना संभव नहीं था। यही कारण था कि मैं किसी बेहतर नौकरी की तलाश में लगा हुआ था।

एक दिन मेरे एक मित्र ने बताया कि RRB कोलकाता में टिकट कलेक्टर के पद के लिए आवेदन निकले हैं। उसने कहा—

“देख लेना, अगर समझ में आए तो फॉर्म भर देना। शायद समय और किस्मत दोनों साथ दे दें और काम बन जाए।”

उसकी बात मुझे अच्छी लगी। मैंने और मेरी पत्नी, दोनों ने टिकट कलेक्टर के पद के लिए आवेदन कर दिया।

लगभग दो महीने बाद रेलवे, कोलकाता से लिखित परीक्षा का प्रवेश-पत्र प्राप्त हुआ। परीक्षा केंद्र कोलकाता में ही था। प्रवेश-पत्र हाथ में आते ही हम दोनों बहुत खुश हुए। परीक्षा तो देनी ही थी, लेकिन उसके बहाने कोलकाता घूमने का भी अवसर मिल रहा था। पत्नी की खुशी तो देखते ही बनती थी।

कोलकाता जाने में अब केवल बीस दिन शेष थे। पत्नी को परीक्षा से अधिक खुशी कोलकाता घूमने की थी और उसने उसी हिसाब से तैयारियाँ भी शुरू कर दी थीं।

लेकिन तभी कुछ ऐसा घटित हुआ कि हमारी कोलकाता जाने की योजना पर पानी फिरता हुआ नज़र आने लगा।

एक शाम मैं अपना काम खत्म करके ऑफिस से घर के लिए निकलने ही वाला था कि पत्नी का फोन आया—

“आते हुए समोसे लेते आना।”

मैंने “हाँ” कहा और ऑफिस से निकल पड़ा।

ऑफिस से निकलते ही एक साथी ने मज़ाक में टोका—

“अरे यादव जी, इतनी जल्दी कहाँ जा रहे हो?”

मैंने हँसते हुए कहा—

“अभी मत टोक, भाई। पत्नी ने समोसे मंगाए हैं और जल्दी आने को कहा है। शायद घर पर कोई मेहमान आया है।”

थोड़ा आगे बढ़ा तो एक और साथी बोला—

“लगता है आज भाभी जी ने जल्दी बुलाया है, तभी इतनी तेजी से भागे जा रहे हो।”

मैंने फिर मुस्कुराकर वही जवाब दिया और जल्दी-जल्दी घर की ओर बढ़ने लगा।

मेरा ऑफिस घने जंगल के बीच लगभग 30-35 फीट की ऊँचाई पर था। वहाँ जाने के लिए केवल एक ही रास्ता था और वह भी पथरीला तथा ऊबड़-खाबड़। उसी दिन बिजली विभाग ने बिजली की तारों के ऊपर आ रही पेड़ों की टहनियों की कटाई की थी। कटाई के बाद पत्ते और टहनियाँ पूरे रास्ते में बिखरी पड़ी थीं, जिससे रास्ता और भी कठिन हो गया था।

मैं तेजी से घर की ओर जा रहा था कि अचानक मेरी मोटरसाइकिल का अगला पहिया एक पत्थर पर चढ़ गया। मोटरसाइकिल का संतुलन बिगड़ गया। मैं खुद को संभाल नहीं पाया और देखते ही देखते लगभग 18-20 फीट नीचे जा गिरा।

मेरे शरीर पर काफी चोटें आईं। हालत ऐसी थी कि मैं ठीक से उठ भी नहीं पा रहा था। तभी सामने से निकट के गाँव की कुछ महिलाएँ लकड़ियाँ लेकर आ रही थीं। उन्होंने मुझे सहारा देकर उठाया। बड़ी मुश्किल से मैंने अपनी मोटरसाइकिल उठाई, जेब से गिरे सामान को समेटा और घर की ओर चल पड़ा।

रास्ते में घर के पास की एक दुकान से गर्म-गर्म समोसे लिए और किसी तरह घर पहुँचा।

जैसे ही मैं घर पहुँचा, पत्नी ने मेरी हालत देखे बिना ही नाराज़ होकर कहना शुरू कर दिया—

“हमेशा की यही आदत है। कभी भी कुछ लाने को बोल दो या कहीं चलने को बोल दो, उसी दिन घर देर से आना होता है।”

वह अपनी ही धुन में बड़बड़ा रही थी, लेकिन मेरे शरीर में लगी चोटों के कारण मुझे बहुत दर्द हो रहा था। दर्द इतना अधिक था कि मैं कुछ भी बोल नहीं पा रहा था। मेरी आँखों से आँसू निकलने लगे।

इसी बीच अचानक पत्नी की नज़र मेरे कपड़ों पर पड़ी। कपड़े धूल-मिट्टी से सने हुए थे और कई जगहों से फट भी गए थे। यह देखकर वह एकदम घबरा गई और उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे।

रोते हुए बोली—

“इतना तेज़ चलाने की क्या ज़रूरत थी? बता नहीं सकते थे कि चोट लग गई है? और मैं यहाँ इतनी देर से बड़बड़ा रही हूँ।”

यह कहते हुए उसने समोसों की थैली एक तरफ रख दी और जल्दी से रसोई में जाकर हल्दी वाला दूध लेकर आई।

दूध पीने के बाद जब मैंने अपनी जैकेट उतारी, तो देखा कि अंदर कमीज़ और दोनों पैरों की पैंट खून से चिपकी हुई थी। पत्नी ने तुरंत ऑटो बुलाया और हम दोनों डॉक्टर के पास गए।

डॉक्टर ने पैर में कच्चा प्लास्टर चढ़ा दिया और कुछ दवाएँ दे दीं। पैर में प्लास्टर और पूरे शरीर में दर्द के कारण मैं दो-तीन दिन तक ऑफिस भी नहीं जा पाया।

लगभग एक सप्ताह बाद हालत में थोड़ा सुधार हुआ। मैंने फिर से चलना-फिरना शुरू कर दिया और ऑफिस भी जाने लगा। चोट लगे अब बारह दिन से अधिक हो चुके थे।

एक दिन शाम को पत्नी ने बड़े उदास मन से कहा—

“ऐसा करते हैं कि कोलकाता जाना कैसिल कर देते हैं।”

मैं उसकी चिंता समझ गया। मैंने कहा—

“क्यों कैसिल करें? कल डॉक्टर प्लास्टर काट देगा। फिर सब ठीक हो जाएगा और हम कोलकाता भी जाएँगे। अगर केवल घूमने जाना होता तो बात अलग थी, लेकिन परीक्षा भी तो देनी है।”

मेरी बात सुनकर उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान तो आई, लेकिन चिंता अभी भी बनी हुई थी।

वह बोली—

“सच में परीक्षा देने जा रहे हैं या सिर्फ घूमने?”

मैं हँस पड़ा।

फिर उसने पूछा—

“चल कैसे पाओगे? क्या दर्द नहीं होगा?”

मैंने कहा—

“अभी चार-पाँच दिन बाकी है। सब ठीक हो जाएगा।”

इस बीच हमारी ट्रेन की टिकट भी कन्फर्म हो चुकी थी।

आखिरकार वह दिन भी आ गया, जब हम कोलकाता के लिए रवाना हुए। स्टेशन पहुँचे तो ट्रेन प्लेटफॉर्म पर खड़ी थी। टिकट कन्फर्म होने के कारण सीट ढूँढने में अधिक परेशानी नहीं हुई।

अगले दिन हम कोलकाता पहुँच गए और रेलवे स्टेशन के पास ही एक होटल में कमरा ले लिया।

अगले दिन रविवार को हमारी परीक्षा थी। हमने होटल के मैनेजर से परीक्षा केंद्र के बारे में पूछा तो उसने कहा—

“परीक्षा केंद्र तो बता देंगे, लेकिन कल पूरा कोलकाता बंद है। शहर में चक्का जाम और कर्फ्यू जैसी स्थिति है। कल यहाँ एक व्यापारी के पूरे परिवार की हत्या कर दी गई है। इस कारण पूरा कोलकाता बंद है। हमें नहीं लगता कि कल आपकी परीक्षा होगी।”

वहीं बैठे एक दंपति ने भी हमारी बात सुनकर कहा—

“भाई साहब, परीक्षा रद्द हो गई है। हम तो वापस जा रहे हैं। आप भी लौट जाइए।”

यह सुनकर पत्नी मन ही मन खुश हो रही थी। मैंने कहा—

“भाई साहब, मैं तो देहरादून से आया हूँ। इतनी दूर से आकर कैसे वापस चला जाऊँ? हमारी वापसी की टिकट भी दो दिन बाद की है।”

होटल वाला बोला—

“कोई बात नहीं। जब इतनी दूर आए हैं तो कोलकाता घूम लीजिए।”

अब हमारे पास और कोई विकल्प भी नहीं था।

अगले दिन सुबह पता चला कि हड़ताल खत्म नहीं हुई है, बल्कि कर्फ्यू भी लगा दिया गया है। अब तो हमें बहुत बुरा लगने लगा।

पत्नी बोली—

“सब बेकार हो गया। परीक्षा भी रद्द हो गई और कहीं घूमने भी नहीं जा सकते।”

हमने जैसे-तैसे आसपास की छोटी-मोटी जगहें देखीं—हावड़ा ब्रिज, ईडन गार्डन, कालीघाट आदि। किसी तरह तीन दिन बीत गए।

वापसी की ट्रेन रात 9:45 बजे थी, लेकिन हम लोग शाम 7 बजे ही स्टेशन पहुँच गए। एक रेस्टोरेंट में बैठकर हम यही सोच रहे थे कि क्या सोचकर आए थे और क्या हो गया। न परीक्षा दे पाए और न ही कोलकाता ठीक से घूम पाए।

इन्हीं सब बातों को सोचते हुए हम दोनों बहुत उदास बैठे थे।

तभी मैंने अपने जीवन का सबसे भयावह दृश्य देखा।

रेलवे स्टेशन पर कुछ लड़के आपस में जोर-जोर से हँसी-मज़ाक कर रहे थे। उनकी हरकतों से आसपास बैठे लोग असहज महसूस कर रहे थे।

तभी वहाँ एक गरीब लड़का आया।

उसके शरीर पर नाम मात्र के कपड़े थे। फटी हुई कमीज़ और पुरानी निकर पहने वह बेहद दयनीय लग रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो उसने कई दिनों से ठीक से खाना नहीं खाया हो।

वह सबके पास जाकर भीख माँग रहा था। लोग उसे एक-दो रुपये देकर टाल रहे थे।

तभी उन लड़कों में से एक ने उसे बुलाया और पूछा—

“क्या चाहिए तुझे? पैसे या कुछ खाने को?”

वह लड़का हाथ जोड़कर बोला—

“भैया जी, बहुत भूख लगी है। कुछ खाने को दे दो।”

पहले एक लड़के ने रोटी का छोटा-सा टुकड़ा उसकी ओर फेंका। लड़के ने तुरंत झुककर उसे उठा लिया।

फिर दूसरे लड़के ने कहा—

“हाँ, मैं तुझे पूरी रोटी दूँगा, पर तुझे वह रोटी सीधे अपने मुँह से पकड़नी होगी। अगर तूने ऐसा किया तो मैं तुझे और रोटी दूँगा।”

उस लड़के ने कहा—

“जी भैया जी, मैं ऐसा ही करूँगा।”

यह सुनकर दूसरे लड़के ने रोटी का टुकड़ा हवा में उछालते हुए कहा—

“सीधे मुँह से पकड़, नहीं तो और रोटी नहीं दूँगा।”

भूखे लड़के ने उछलकर वह टुकड़ा अपने मुँह से पकड़ लिया।

यह सब देखकर मुझे और आसपास बैठे कई लोगों को बहुत बुरा लग रहा था, लेकिन कोई कुछ बोलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। मेरी पत्नी ने भी मेरा हाथ पकड़कर चुप रहने का इशारा किया।

तभी उन लड़कों में से एक बोला—

“चल, अब तुझे पूरी दो रोटियाँ दूँगा। देख, पकड़ पाता है या नहीं।”

यह सुनकर वह भूखा लड़का बहुत खुश हो गया।

तभी वहाँ एक कुत्ता भी आ गया और वहीं आसपास घूमने लगा। भूखे लड़के को उस कुत्ते को देखकर गुस्सा आने लगा, क्योंकि उसे डर था कि कहीं कुत्ता उसकी रोटी न खा जाए। इसलिए वह उसे भगाने लगा।

उधर उन लड़कों को यह देखकर शरारत सूझी। उनमें से एक लड़का बोला—

“अब देख, मैं रोटी उछालूँगा। अगर तू नहीं पकड़ पाया तो यह कुत्ता खा जाएगा।”

इतना कहकर उसने रोटी उस गरीब लड़के की ओर न फेंककर कुत्ते की ओर उछाल दी।

कुत्ता रोटी की तरफ झपटा। वह लड़का भी उसी दिशा में दौड़ा।

रोटी कुत्ते के मुँह तक पहुँच गई। रोटी लगभग कुत्ते के मुँह के अंदर जा चुकी थी। कुत्ता खुश था कि अब रोटी उसी की है। अपने मन में वह यही सोच रहा था कि रोटी अब उसी की हो गई है और वह अपना मुँह बंद करने लगा।

लेकिन तभी अचानक उस भूखे लड़के ने अपना हाथ कुत्ते के मुँह में डाल दिया, जो लगभग बंद हो चुका था, और रोटी बाहर निकाल ली।

कुत्ता स्तब्ध रह गया और इधर-उधर देखने लगा। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि जो रोटी अभी उसके मुँह में थी, वह अचानक कहाँ चली गई।

वहीं दूसरी ओर वह लड़का ऐसे खुश हो रहा था, मानो उसने कोई बहुत बड़ी लड़ाई जीत ली हो।

कुत्ते के मुँह से रोटी निकालते वक्त उसके दाँतों से उस लड़के का हाथ छिल गया था और उसके हाथ से हल्का-हल्का खून निकलने लगा था। परंतु उस लड़के को इससे कोई फर्क नहीं पड़ रहा था।

वह तो रोटी लेकर खुश था।

उस क्षण मेरी आँखों के सामने भूख का एक ऐसा रूप था, जिसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकता।

उस दिन मैंने अपनी आँखों से देखा कि भूख इंसान को कितना मजबूर कर देती है।

भूख के कारण उस समय उस लड़के ने यह भी नहीं सोचा कि यदि कुत्ता उसे काट लेता, तो क्या होता।

उस समय उसके लिए सबसे बड़ी चीज़ केवल वह रोटी थी।

और शायद उस दिन मुझे पहली बार यह एहसास हुआ कि हमारे लिए जिस रोटी का एक टुकड़ा महज़ भोजन है, किसी भूखे इंसान के लिए वही रोटी जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकती है।



लता पांडे

छात्र मामले विभाग

सामाजिक बदलाव में शिक्षा का महत्व

सामाजिक बदलाव से तात्पर्य समाज की संरचना, समाज में सांस्कृतिक बदलाव, आचार-विचार, सामाजिक संबंधों और मनुष्य का एक-दूसरे के प्रति समय के साथ होने वाले परिवर्तन से है। यह हमेशा चलने वाली प्रक्रिया है, जो समय के साथ बदलती रहती है। इसके मुख्य कारणों में समाज में जनसंख्या में बदलाव, तकनीकी शिक्षा में बदलाव, आर्थिक क्षेत्र में बदलाव, परिश्रम, तकनीकी विकास आदि सम्मिलित हैं, जो मनुष्य की जीवन शैली को प्रभावित करते हैं।

शिक्षा क्या है? – शिक्षा हमेशा चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हम ज्ञान, कौशल, सामाजिक व्यवहार, संस्कार और नैतिक मूल्यों को सीखते हैं। शिक्षा एक ऐसा शस्त्र है, जिसके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि जीवन को एक सही मार्ग और दिशा देने तथा सही-गलत को समझने की क्षमता है। शिक्षा का शाब्दिक अर्थ **‘सीखना और सिखाना’** है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को समाज के आगे रख सकते हैं और समाज से कुछ अर्जित कर सकते हैं। शिक्षा मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक चलने वाली प्रक्रिया है, जिसे हम समाज, परिवार और अपने अनुभवों से सीखते हैं। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का संपूर्ण विकास करना, आत्मविश्वास उत्पन्न करना और जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान खोजने में हमें सक्षम बनाना है। शिक्षा मनुष्य के पास एक ऐसा रास्ता है, **जो हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाती है।**

शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है?

शिक्षा प्राप्त करना हमारा मौलिक मानवाधिकार है। इससे न केवल व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, बल्कि उसकी बुद्धि और कौशल को भी बढ़ावा मिलता है। शिक्षा के अभाव के कारण व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुँच पाता है। स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चे अपने कार्य-कौशल और क्षमताओं के विकास से दूर रह जाते हैं, जिसके कारण वे अपने जीवन को बेहतर बनाने के अवसरों से वंचित हो जाते हैं। इससे समाज में बेरोजगारी को बढ़ावा मिलता है और युवाओं में तनाव जैसी मानसिक स्थितियाँ पैदा हो जाती हैं।

शिक्षा के अभाव के कारण युवा अपने अंदर छिपे हुनर को दिखाने में असमर्थ रह जाते हैं और गलत कार्यों को करने की ओर प्रवृत्त (आकर्षित) हो जाते हैं। शिक्षा की शुरुआत व्यक्ति के जीवन में प्रारंभिक अवस्था यानी बचपन से ही होनी चाहिए, क्योंकि वही वह समय होता है जब मस्तिष्क का सबसे महत्वपूर्ण विकास होता है।

देश में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा उचित प्रयास किए जा रहे हैं ताकि हर बच्चे को सही शिक्षा मिल सके। अगर देश का युवा शिक्षित होगा तो हमारा समाज भी शिक्षित और मजबूत बनेगा। इसी उपलक्ष्य में हमारी शिक्षा प्रणाली को और बेहतर बनाने के संकल्प लिए जाते हैं।

सामाजिक बदलाव में शिक्षा का योगदान-

सामाजिक बदलाव में शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के बिना मानव जीवन अधूरा है। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जो रूढ़िवादी सोच को बदलकर समाज में आधुनिकता, समानता और प्रगति के स्तरों में बदलाव लाती है। शिक्षा लोगों के बीच से भेदभाव, अंधविश्वास और सामाजिक बुराइयों को दूर करने में हमारी मदद करती है, जिसके द्वारा हम एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करते हैं।

सामाजिक बदलाव में शिक्षा के महत्व को समझने के लिए कुछ निम्न बिंदु हैं, जिससे हम समाज में हो रहे बदलाव को देख सकते हैं:

1. जागरूकता और सशक्तिकरण
2. रूढ़िवादी सोच में बदलाव
3. भेदभाव की भावना में कमी और समानता को बढ़ावा
4. तकनीकी प्रगति और शिक्षा का विकास
5. बाल-विवाह पर रोकथाम
6. व्यावसायिक विकास
7. छात्रों को मार्गदर्शन की प्रेरणा देना, इत्यादि।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा एक ऐसा साधन है, जो समाज में रहने वाले सभी वर्गों के लिए समान अवसर प्रदान करती है। यह समाज में समानता और सामाजिक न्याय की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। शिक्षा के माध्यम से ही गरीब और पिछड़े वर्ग के लोग आर्थिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ होते हैं, जिससे वे अपने जीवन में सम्मान और आत्मविश्वास प्राप्त करने का अवसर पाते हैं। शिक्षा के माध्यम से लोग समाज में अपना अधिकार माँगने और न्याय के लिए आवाज उठाने की शक्ति प्राप्त करते हैं।

शिक्षा अन्याय के खिलाफ लड़ने और समाज में सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण है।

अंततः हम कह सकते हैं कि—

“शिक्षा एक वृक्ष है, जो दिल में उगता है, दिमाग में पलता है, और जुबान से फल देता है।”



मयंक कुमार
(प्रशासनिक सहायक)

तकनीक, संवेदनशीलता और नेतृत्व: भविष्य के प्रबंधकों की त्रिवेणी

“विज्ञान ने हमें शक्ति दी है, पर दिशा विवेक ही देता है।” — डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

इक्कीसवीं सदी का विश्व तीव्र गति से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। तकनीकी नवाचार, वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। प्रबंधन और नेतृत्व भी इससे अछूते नहीं हैं। आज का युग केवल तकनीकी दक्षता का नहीं, बल्कि उस दक्षता को मानवीय संवेदनशीलता और नैतिक नेतृत्व से जोड़ने का है। ऐसे समय में तकनीक, संवेदनशीलता और नेतृत्व की त्रिवेणी भविष्य के प्रबंधकों के लिए केवल विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन गई है। परिवर्तनशील विश्व में वही संगठन और वही नेता टिकाऊ सिद्ध होंगे, जो तकनीक का उपयोग मानव कल्याण, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों के साथ कर सकेंगे।

तकनीक: आधुनिक प्रबंधन की आधारशिला

तकनीक ने आधुनिक प्रबंधन को अभूतपूर्व शक्ति प्रदान की है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण, स्वचालन और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने निर्णय-निर्माण को अधिक तर्कसंगत, तीव्र और सटीक बना दिया है। आज संगठन अनुभव के साथ-साथ आँकड़ों के आधार पर निर्णय ले रहे हैं, जिससे प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में वृद्धि हुई है।

किन्तु तकनीक अपने आप में निरपेक्ष नहीं होती। उसका स्वरूप और प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उसका उपयोग किस उद्देश्य से किया जा रहा है। यदि तकनीक का प्रयोग केवल लाभ, नियंत्रण और मुनाफे तक सीमित रह जाए, तो वह सामाजिक विषमता और मानवीय संकट को जन्म दे सकती है।

“तकनीक तभी उपयोगी है, जब वह मानव जीवन को सरल और सार्थक बनाए।” — डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

अतः भविष्य के प्रबंधकों के लिए यह आवश्यक है कि वे तकनीक को साध्य नहीं, बल्कि साधन के रूप में देखें।

संवेदनशीलता: मानवीय मूल्यों का केंद्र

संवेदनशीलता आधुनिक नेतृत्व का नैतिक आधार है। यह केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि कर्मचारियों, ग्राहकों, समाज और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की चेतना है। एक संवेदनशील प्रबंधक संगठन को केवल आर्थिक इकाई नहीं, बल्कि सामाजिक संस्था के रूप में देखता है।

डिजिटल युग में, जहाँ कार्यस्थल आभासी हो रहे हैं और मानवीय संवाद सीमित होता जा रहा है, संवेदनशीलता का महत्व और बढ़ गया है। मानसिक स्वास्थ्य, कार्य-जीवन संतुलन, लैंगिक समानता और समावेशन जैसे विषय आज प्रबंधन के केंद्र में होने चाहिए।

“व्यवसाय का उद्देश्य केवल लाभ नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी है।” — रतन टाटा

यह कथन भारतीय प्रबंधन दर्शन को स्पष्ट करता है, जहाँ लाभ और लोक-कल्याण को विरोधी नहीं, बल्कि पूरक माना गया है।

नेतृत्व: दिशा, दृष्टि और नैतिक साहस

नेतृत्व केवल पद या अधिकार का नाम नहीं है। यह दृष्टि, प्रेरणा और नैतिक साहस का समन्वय है। परिवर्तनशील विश्व

में नेतृत्व की भूमिका और अधिक जटिल हो गई है। आज नेता को तकनीकी परिवर्तन, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है।

“नेतृत्व वह है, जो अंधकार में भी दिशा दिखा सके।” — महात्मा गांधी

भविष्य का नेतृत्व आदेशात्मक नहीं, बल्कि सहभागी होगा। ऐसा नेतृत्व जो संवाद को महत्व दे, विविध विचारों को स्वीकार करें और टीम को निर्णय-प्रक्रिया का भागीदार बनाए।

संतुलन: भविष्य के प्रबंधकों की सबसे बड़ी चुनौती

तकनीक, संवेदनशीलता और नेतृत्व—तीनों का संतुलन ही प्रभावी प्रबंधन की कुंजी है। तकनीक यदि संवेदनशीलता से रहित हो, तो वह अमानवीय बन जाती है। संवेदनशीलता यदि नेतृत्व से विहीन हो, तो वह केवल भावनात्मक आदर्शवाद बनकर रह जाती है। और नेतृत्व यदि तकनीक और संवेदनशीलता से कट जाए, तो वह केवल सत्ता का प्रदर्शन बन जाता है।

प्रबंधन शिक्षा और भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर की भूमिका

ऐसे समय में प्रबंधन शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर का विज्ञान—उत्कृष्ट प्रबंधन शिक्षा के माध्यम से समाजोपयोगी और उत्तरदायी नेतृत्व का विकास—इस त्रिवेणी की भावना को पूर्णतः प्रतिबिंबित करता है।

आई.आई.एम काशीपुर का मिशन केवल तकनीकी दक्षता विकसित करना नहीं, बल्कि ऐसे प्रबंधक तैयार करना है जो नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्ध हों। पाठ्यक्रमों में तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ मूल्य-आधारित शिक्षा और सामाजिक सहभागिता इसी दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

“शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविका नहीं, बल्कि जीवन निर्माण है।” — डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

निष्कर्ष

परिवर्तनशील विश्व में भविष्य के प्रबंधकों की सफलता केवल तकनीकी दक्षता पर निर्भर नहीं करेगी, बल्कि इस बात पर निर्भर करेगी कि वे तकनीक को किस संवेदनशीलता और किस नैतिक दृष्टि के साथ उपयोग करते हैं। तकनीक, संवेदनशीलता और नेतृत्व की त्रिवेणी न केवल संगठनों को टिकाऊ बनाएगी, बल्कि समाज को भी एक मानवीय और नैतिक दिशा प्रदान करेगी।

अंततः, वही नेतृत्व सार्थक है जो परिवर्तन को मानवीय मूल्यों के साथ अपनाए और वही प्रबंधन सफल है जो लाभ के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व को भी समान महत्व दे। यही भविष्य के प्रबंधकों की वास्तविक पहचान और भारतीय प्रबंधन दर्शन की सुदृढ़ नींव है।



मनीष कुमार शर्मा

प्रशासनिक अधिकारी (संकाय मामलों
का कार्यालय)

घर- जहाँ दिल हमेशा लौटना चाहता है।

हर सुबह, जब भीड़-भाड़ वाले शहर पर सूरज उगने से पहले, अनुज पहले ही जाग चुका होता था। वह एक पुराने भवन की तीसरी मंजिल पर एक छोटे से किराए के कमरे में रहता था। उस कमरे में एक बिस्तर, एक लोहे की अलमारी, एक छोटा चूल्हा और दीवार पर टंगा एक कैलेंडर था। वह घर से बहुत दूर था—उस घर से जहाँ वह बड़ा हुआ था, उन खेतों से दूर, उन जानी-पहचानी गलियों से दूर, और सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने परिवार से दूर।

अनुज पाँच साल पहले काम की तलाश में शहर आया था। उसके गाँव में ज्यादा अवसर नहीं थे और उसका परिवार उसी पर निर्भर था। उसकी पत्नी सीता उनके दो बच्चों और बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करती थी। अनुज एक निर्माण स्थल पर सुपरवाइज़र के रूप में काम करता था, सुबह जल्दी निकल जाता और देर शाम लौटता था।

हर दिन थकाने वाला होता था। लेकिन जब भी वह थक जाता, वह खुद को याद दिलाता कि वह वहाँ क्यों है। उसकी बेटी को स्कूल की किताबों की जरूरत थी। उसका बेटा इंजीनियर बनने का सपना देखता था। उसके माता-पिता को दवाइयों की जरूरत थी। सीता घर को बहुत ही शांत तरीके से, उसके भेजे हुए पैसों से संभालती थी। अनुज बहुत कम शिकायत करता था। फिर भी एक चीज थी जिसकी उसे आदत नहीं पड़ पाई थी—अकेलापन।

एक शाम, काम से लौटकर वह अपने बिस्तर पर बैठा और अपना पुराना मोबाइल फोन खोला। उसमें कई तस्वीरें सेव थीं। एक में उसकी बेटी स्कूल यूनिफॉर्म में मुस्कुराती हुई थी। दूसरी में उसका बेटा क्रिकेट बैट पकड़े हुए था। एक पुरानी पारिवारिक तस्वीर भी थी जो उनके गाँव के घर के सामने ली गई थी। वह उसे बहुत देर तक देखता रहा।

अचानक उसे घर की आवाजें सुनाई देने लगीं—खिड़की के बाहर चिड़ियों की चहचहाहट, माँ की आवाज जो उसे खाने के लिए बुला रही थी, बच्चों की हँसी, और सीता का यह पूछना कि वह इतनी देर से घर क्यों आया? वह मुस्कुराया! फिर उसकी आँखें नम हो गईं। अनायास ही बचपन में सुनी हुई एक गजल की पंक्तियाँ याद आ गईं जिसे मशहूर गीतकार योगेश ने लिखा है—

“वक्त का ये परिंदा रुका है कहाँ

मैं था पागल जो इसको बुलाता रहा

चार पैसे कमाने मैं आया शहर

गाँव मेरा मुझे याद आता रहा

गाँव मेरा मुझे याद आता रहा”

तभी उसका फोन बजा। सीता का कॉल था, “खाना खा लिया?” उसने पूछा। “हाँ,” अनुज ने जवाब दिया, जबकि उसने खाया नहीं था। “आज का दिन कैसा रहा?” “ठीक था। बस थोड़ा थकाने वाला।”

फोन बच्चों के हाथ में आ गया। “पापा! आप घर कब आ रहे हो?” अनुज कुछ पल चुप रहा। “जल्द,” उसने कहा। “आप हमेशा यही कहते हो।” वह हल्के से हँसा। “इस बार पक्का।” उसका बेटा फोन ले आया।

“पापा, मैं अपनी क्लास में फर्स्ट आया हूँ! “बहुत अच्छा!” अनुज ने गर्व से कहा। “मुझे पता था तुम करोगे।” सबसे बात करने के बाद अनुज ने फोन रख दिया। कमरा फिर से शांत हो गया। उसने खिड़की से बाहर देखा। शहर हजारों रोशनी

से चमक रहा था, लेकिन उनमें से कोई भी उसके गाँव के घर के बाहर जलने वाले छोटे दीये जितनी गर्म नहीं लग रही थी। उसे अपनी माँ का खाना याद आया। उसे अपने पिता के साथ शाम में बैठना याद आया। उसे अपने बच्चों को खेलते देखना याद आया। लेकिन सबसे ज्यादा उसे सीता के साथ रात के खाने के बाद साधारण बातें करना याद आया।

अगली सुबह अनुज को उसकी तनख्वाह मिली। उसने उसका ज्यादातर हिस्सा तुरंत घर भेज दिया। फिर उसने अपने हाथ में बचे पैसे देखे। वह महीनों से अपनी बेटी के लिए नया स्कूल बैग खरीदने के लिए बचत कर रहा था। उसने तय किया कि वह इसे काम से लौटते समय खरीदेगा। उस शाम, जब वह भीड़-भाड़ वाले बाजार से गुजर रहा था, उसने एक छोटी लड़की को अपने पिता का हाथ पकड़े देखा। एक पल के लिए अनुज रुक गया। उसे अपनी बेटी याद आ गई। उसने बैग खरीद लिया।

उस रात उसने फिर घर फोन किया। “मुझे कुछ बताओ,” उसने कहा।

“क्या?” सीता ने पूछा। “शाम को हमारा घर कैसा दिखता है?” सीता हँसी। “हमेशा जैसा ही।”

“फिर भी बताओ।” तो उसने सब कुछ बताया—बच्चों का होमवर्क करना, माँ का बरामदे में बैठना, पिता का अखबार पढ़ना, रसोई से आने वाले खाने की खुशबू, और गाँव की सड़क का रात में शांत हो जाना। अनुज सुनते हुए आँखें बंद कर लेता है। कुछ मिनटों के लिए वह भीड़-भाड़ वाले शहर में नहीं था। वह घर पर था। महीने बीत गए।

फिर एक शुक्रवार दोपहर उसके सुपरवाइज़र ने बताया कि मजदूरों को कुछ दिन की छुट्टी मिलेगी। अनुज ने एक पल भी बर्बाद नहीं किया। उसने एक छोटा बैग पैक किया, अपने माता-पिता के लिए मिठाइयाँ खरीदीं, बेटी के लिए स्कूल बैग और बेटे के लिए क्रिकेट बैट लिया। सीता के लिए उसने एक साधारण साड़ी खरीदी—वही जो उसने कभी दुकान की खिड़की में पसंद की थी।

घर की यात्रा अनंत सी लग रही थी। जब बस आखिरकार उसके गाँव में दाखिल हुई, अनुज ने खिड़की से बाहर देखा। जाने-पहचाने खेत वहाँ थे। पुराना बरगद का पेड़ सड़क के पास खड़ा था।

और दूर उसे अपने घर की छत दिखाई दी। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। जैसे ही वह बस से उतरा, उसने अपने बच्चों को उसकी ओर दौड़ते देखा। “पापा!”

उसने अपना बैग गिरा दिया और अपनी बांहें फैला दीं।

उसकी बेटी ने उसे कसकर गले लगा लिया। उसका बेटा खुशी से उसके चारों ओर कूदने लगा। कुछ कदम पीछे सीता खड़ी थी, आँखों में आँसू और चेहरे पर मुस्कान लिए।

अनुज ने अपने परिवार को देखा और वह खुशी महसूस की जिसे कोई तनख्वाह नहीं खरीद सकती थी। वह अपने परिवार के बेहतर भविष्य के लिए वर्षों दूर रहा था। लेकिन उस पल उसने एक महत्वपूर्ण बात समझी।

घर सिर्फ वह जगह नहीं होती जहाँ इंसान पैदा होता है। घर वह जगह होती है जहाँ दिल बार-बार लौटना चाहता है।

दुनिया चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो जाए, शहर कितने भी चमकदार क्यों न हो जाएँ और ज़िंदगी इंसान को कितनी भी दूर क्यों न ले जाए—कुछ आवाज़ें, कुछ चेहरे, कुछ खुशबू और कुछ पुरानी यादें हमेशा उसे उसकी जड़ों की ओर खींचती रहती हैं।



लकी डेंगरे

(पुस्तकालय विभाग)

शिक्षा एक अधिकार

शिक्षा जीवन की सबसे महत्वपूर्ण धरोहर है। यह केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं है बल्कि यह मानव के व्यक्तित्व को विकसित करने और समाज में उसका सही स्थान सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। शिक्षा से न केवल व्यक्ति की सोच और दृष्टिकोण में सुधार होता है बल्कि यह समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना देश के हर नागरिक का अधिकार है। शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा के बलबूते पर अपने करियर का निर्माण करता है। हाँ, यह कहना गलत नहीं होगा कि एक शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा, ज्ञान और अपने कौशल के आधार पर एक मजबूत और सफल करियर की नींव रखता है। शिक्षा न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करती है, बल्कि व्यक्ति को सही निर्णय लेने और जीवन में आगे बढ़ने योग्य भी बनाती है।

शिक्षा, शिक्षित व्यक्ति की एक ऐसी पूंजी होती है जो उसका हमेशा साथ देती है। आज के युग में यह सच है कि बुरे वक्त पर कई बार अपने भी साथ छोड़ देते हैं। मुश्किल समय में इंसान अकेला रह जाता है। यह जीवन का एक कड़वा सच है, जिसे बहुत से लोग अनुभव करते हैं। लेकिन शिक्षा किसी व्यक्ति ने ली तो वो उस व्यक्ति का साथ कभी नहीं छोड़ती है और उन्नति की ओर ले जाती है।

आज की शिक्षा पुरानी शिक्षा से बहुत अलग है। पहले के समय में विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने के लिए वहाँ पर उपस्थित होना जरूरी होता था लेकिन आज के वर्तमान जीवन में ऑनलाइन शिक्षा का बोलबाला है, ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी देश / विदेश जहां भी वह रह रहा है, वहाँ से इंटरनेट के माध्यम से किसी भी उपाधि को प्राप्त करने के लिए जुड़ सकते हैं और शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा ने अपने पैर उस समय अधिक पसारे जब पूरी दुनिया कोविड-19 महामारी सार्स-कोव-2 (SARS-CoV-2) वायरस से जूझ रही थी, और लॉकडाउन के कारण सभी शिक्षा केंद्र बंद थे। आज के समय में दुनिया के सारे देशों के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे हैं।

ऑनलाइन शिक्षा (E-learning) इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों (कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन) के माध्यम से घर बैठे शिक्षा प्राप्त करने का एक आधुनिक साधन है। इसमें आभासी कक्षाओं (Virtual classes), पहले से रिकॉर्ड किए गए वीडियो लेक्चर्स, ई-बुक्स, और लाइव वेबिनार के ज़रिए पढ़ाई होती है, जिससे स्थान व समय की सीमाएं खत्म हो जाती हैं। वीडियो और लाइव क्लासेस के लिए शिक्षक यूट्यूब, जूम, गूगल मीट, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स और पीएम ई-विद्या डीटीएच टीवी चैनल इत्यादि प्लेटफॉर्म और उपकरण का उपयोग करते हैं।



जीतपाल सिंह

प्रशासनिक सहायक (कार्मिक विभाग)

84 दिन का सवाल: आज के युवा के लिए श्रीदेव सुमन क्यों जरूरी हैं?

अक्सर हमें इतिहास बड़ी इमारतों, युद्ध या किसी राजनीतिक घोषणा के रूप में याद रहता है। क्या कभी इतिहास हमें एक मनुष्य द्वारा पूछे गए सवालों के रूप में याद रहता है? उसका जीवन समाप्त हो जाता है, परंतु उनके द्वारा पूछा गया सवाल आज भी अमर है।

उत्तराखण्ड के श्रीदेव सुमन की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। आज से लगभग आठ दशक पहले टिहरी की जेल में कैद एक युवा जिसका शरीर अनशन से धीरे-धीरे कमजोर हो रहा था। वह अपने शरीर को बचाने के लिए चुपचाप राजशाही से समझौता कर सकता था, परंतु प्रतिरोध का माध्यम उसका शरीर था और 84 दिनों तक आमरण अनशन करने के बाद श्रीदेव सुमन 25 जुलाई 1944 को शहीद हो जाते हैं।

आज श्रीदेव सुमन हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनका संघर्ष हमें नहीं भूलना चाहिए। उनका संघर्ष केवल एक व्यक्ति मात्र के लिए नहीं था, समाज के लिए था। उस व्यवस्था के विरुद्ध था जो समाज की आवाज दबा रही थी। 84 दिनों तक भूखा रहना विरोध था। यह कहने का कि किसी मनुष्य की आवाज को केवल इसलिए अनसुना नहीं की जा सकता कि उसके पास शक्ति, धन, सत्ता और हथियार नहीं हैं।

आज हम श्रीदेव सुमन को स्वतंत्रता सेनानी और जननायक के रूप में याद करते हैं। परंतु उनके जीवन को जानना और उनके जीवन से सीखना दो अलग-अलग बातें हैं। उन्हें श्रद्धांजलि देना, उनके नाम पर विश्वविद्यालय खोलना, उनके चित्र पर माल्यार्पण और पुष्प चढ़ाना उनके 84 दिनों के ऐतिहासिक संघर्ष को नगण्य बना देता है, यदि हम उनके चरित्र से कुछ सीख नहीं रहे हैं।

आज श्रीदेव सुमन इसीलिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि आज हमारे पास अपनी आवाज जनता तक पहुंचाने के कई साधन हैं। हमारे हाथ में मोबाइल, मोबाइल में इंटरनेट, इंटरनेट पर सोशल मीडिया है। अपनी बात और आवाज जनता तक पहुंचाने में कुछ मिनट से अधिक का समय नहीं लगता है। लेकिन सवाल वही है कि क्या वह आवाज वास्तव में हमारी ही है। श्रीदेव सुमन के सामने समस्याएं अलग थीं, आज की समस्याएं अलग हैं। युवा बेरोजगार हैं, प्रतियोगिता में जीतने की दौड़ में लगा है, पर्यावरण संकट में है। पहाड़ पलायन की मार झेल रहे हैं और सच झूठी खबरों के नीचे दबा है।

उस दौर और आजके दौर की समस्याएं अलग हो सकती हैं, परंतु आज भी वही सवाल है—सच और झूठ के बीच का चुनाव। आज हम श्रीदेव सुमन जैसा 84 दिन का अनशन तो नहीं कर सकते, लेकिन एक सवाल तो पूछ ही सकते हैं। सवाल पूछना तो प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। एक सवाल पूछकर उस दायित्व का निर्वहन तो किया ही जा सकता है। लोकतंत्र केवल वोट डालना ही नहीं है, अपनी असहमति व्यक्त करना भी लोकतंत्र है।

सवाल पूछना जरूरी है!

बच्चे जर्जर छत के नीचे पढ़ रहे हैं, कोई सवाल नहीं पूछता।

गंगा-यमुना प्रदूषित है, कोई सवाल नहीं पूछ रहा।

पहाड़ पिघल रहे हैं, कोई सवाल नहीं पूछ रहा।

गरीब के साथ अन्याय हो रहा है, कोई सवाल नहीं पूछता।

भ्रष्टाचार हो रहा है, कोई सवाल नहीं।

समाज के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी क्या है?

अक्सर हम ऐसी ही किसी घटना के विषय में सुनते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, चर्चा करते हैं और इंस्टाग्राम की अगली रील में व्यस्त हो जाते हैं। यहीं श्रीदेव सुमन का 84 दिनों का अनशन हमें टोकता है और याद दिलाता है कि किसी घटना पर क्षणिक प्रतिक्रिया से बेहतर समाधान के लिए निरंतर प्रयास होना चाहिए। सुमन के चरित्र से सीखकर थोड़ा संवेदनशील तो बना ही जा सकता है। इसी विषय पर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की कुछ पंक्तियां याद आ जाती हैं—

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।

वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रतियोगी परीक्षा पास करके, नौकरी प्राप्त करना और धन कमाना ही नहीं है। शिक्षा का व्यापक उद्देश्य समाज को बेहतर बनाना है। श्रीदेव सुमन का जीवन हमें शिक्षा के इसी व्यापक अर्थ की ओर ले जाता है।

श्रीदेव सुमन को सच्ची श्रद्धांजलि देने का सबसे बेहतर तरीका है अपने से सवाल पूछना कि जिस समाज ने मुझे बनाया, मैंने उस समाज के लिए क्या किया। इतिहास इन्हीं छोटे निर्णयों से बनता है, जो कभी कैमरे की तस्वीरों में कैद नहीं होते। श्रीदेव सुमन का जीवन तो 84 दिन में समाप्त हो गया था, परंतु उनके द्वारा पूछा गया सवाल आज भी जिंदा है कि “तुम्हारे समय की समस्या क्या है और उसके प्रति तुम्हारी आवाज कहाँ है”?

कल जब सूरज अपनी लालिमा लिए क्षितिज पर होगा और हर नई किरण के साथ नई पीढ़ी जब आपसे यह सवाल पूछे, तो आशा करता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर आपके पास हो।



पूजा

(सहायक लेखा कार्यकारी)

हिमालय बचाना आज हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी

हिमालय जहां एक ओर हमारे देश के माथे का मुकुट एवं विराट संस्कृति है वहीं दूसरी ओर यह देश का सबसे बड़ा प्रहरी है। हिमालय केवल एक विशाल पर्वत माला ही नहीं अपितु पृथ्वी पर समस्त जीव-जंतुओं के जीवन का आधार है। यहां की बहुमूल्य जड़ी - बूटियां औषधि के काम आती हैं। इस भव्य एवं दिव्य श्वेत सागर पर हमारे देश के अनेक धार्मिक स्थल विराजमान हैं। इसकी सुंदर श्वेत घाटियां इसे धरती का स्वर्ग बनाती हैं।

हिमालय प्राचीन काल से ही हमारे देश का आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल रहा है, अनेक ऋषि - मुनियों ने यहां की गुफाओं में तपस्या की है।

हिमालय से निकलने वाली गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र आदि नदियाँ ही सम्पूर्ण देश को सींच रही हैं। ये नदियां केवल कृषि भूमि को ही उपजाऊ नहीं बनाती हैं बल्कि हमारे सभी पेय जल के स्रोत हिमालय एवं नदियों पर ही निर्भर हैं। हिमालय के ऊँचे-ऊँचे पर्वत ही जलवायु के संतुलन को बनाए रखते हैं एवं ठंडी हवाओं को रोकते हैं। यहां के हरे भरे बुग्याल (मखमली घास के मैदान) अति सुंदर एवं रमणीक हैं।

हिमालय पर्यटन एवं पर्वतारोहण के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। देश विदेश से लाखों सैलानी हर वर्ष हिमालयी राज्यों में घूमने आते हैं।

परंतु आज हिमालयी क्षेत्र बहुत ही दूषित हो चुका है और इसकी ऊँची- ऊँची बर्फीली चोटियां धीरे-धीरे पिघलती जा रही हैं। अत्यधिक बर्फ पिघलने से जलस्रोत सूखते जा रहे हैं और पर्यावरण में लगातार तापमान बढ़ता जा रहा है।

हिमालयी क्षेत्र में लगातार बढ़ते हुए पर्यटन के कारण जंगलों को काटकर के बड़े-बड़े होटलों का निर्माण किया जा रहा है। पहाड़ों पर जगह-जगह सड़कों का जाल बिछाया जा चुका है।

पर्यटकों द्वारा भारी वाहनों से आवागमन एवं अत्यधिक प्लास्टिक के उपयोग के कारण हिमालय की सुन्दरता एवं शांत वातावरण को गंभीर नुकसान पहुँच रहा है।

पहाड़ों पर बढ़ता हुआ अनियंत्रित पर्यटन एवं आवश्यकता से अधिक भूमि कटान आज हिमालय के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है।

क्योंकि हिमालय हमारी प्राकृतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक धरोहर है और जलवायु को व्यवस्थित एवं निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाता है इसलिए इसे बचाना आज अत्यंत आवश्यक हो गया है।

हिमालय की ऊँची चोटियां सदैव बर्फ से ढकी रहें और उसकी सुंदरता बनी रहे उसके लिए आज हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम पर्यावरण के साथ खिलवाड़ ना करें। हिमालयी क्षेत्र पर भूमि कटान रोककर, अधिक से अधिक पेड़ लगाकर, एवं पर्यटन को सीमित करके अभी भी हम हिमालय को बचा सकते हैं और आने वाली पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं।

हिमालय बचेगा तभी जल स्रोत बचेंगे, पर्यावरण बचेगा, देश पड़ोसी देशों से सुरक्षित रहेगा।

हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी: सुरक्षित हिमालय- सुरक्षित राष्ट्र।



सचिन कुमार
(पीएचडी 2508)

घर से मंज़िल तक

जब कदम घर से बाहर निकल ही गए हैं, तो याद रखना कि मंज़िल शायद थोड़ी देर से मिले।
रास्ते में जब भी कोई दो राह आए तो घबराना नहीं, बस अपने दिल की आवाज़ सुनने की कोशिश करना।
तुम कोई भी राह चुनो, अक्सर ऐसा लगेगा कि शायद दूसरी राह ज़्यादा बेहतर थी।
पर तुम अपने मन की आवाज़ पर भरोसा रखना, तुम अपने हर फैसले की कद्र करना।
क्या होगा अगर तुम गलत साबित हुए? या तो कुछ नया सीख जाओगे या मंज़िल को पा लोगे।
मंज़िल की तरफ आगे बढ़ो, तो बस इतना देख लेना कि कहीं किसी अपने को पीछे तो नहीं छोड़ आए?
यह भी गौर करना कि क्या तुमने दूसरों को उनकी मंज़िल की ओर बढ़ने में मदद की?
इतिहास गवाह है, जिसने दूसरों को आगे बढ़ाया, उसने अपनी मंज़िल भी ज़रूर पाई है।
कोई डराए, भटकाए, बरगलाए, धमकाए, सताए या कितना भी परेशान क्यों न करे—
रास्ते सीधे हों, टेढ़े हों, भूलभुलैया लगें या चलते हुए साँसें फूलने लगें—
तुम्हें सम्मान मिले या लोग ताने दें, यह दुनिया तुम्हें पहचाने या तुम गुमनाम रह जाओ—
तुम बस इतना याद रखना, जब घर से निकल ही पड़े हैं, तो अब मंज़िल पाकर ही दम लेंगे।



अखिल सिंह
(MBAA24147)

बूढ़ी आँखों का इंतजार

बड़े खामोश बैठे हैं
सुनाई सब कुछ देता है
हकीकत धुंधली-धुंधली सी
दिखाई सब कुछ देता है
हकीकत धुंधली.....

गला भी सूखा है मेरा
आवाज़ टूटी-फूटी सी
यह आँखें गीली सी तो हैं
पर आँसू भी न बहाती हैं
ये आँखें.....

फिज़ा भी चादर ओढ़े है
मोहल्ला सूना-सूना सा
कहीं कोई सिसकी भरता है
कहीं कोई हिचकी भरता है
कहीं कोई सिसकी.....

तेरी याद आती है
जब भी कोई गुजरता है
इन बच्चों की किलकारी में
तेरा चेहरा दिखता है
इन बच्चों की.....

तेरा कमरा सजता है
तेरा बिस्तर लगता है
ऐसे ही तेरी माँ का
पूरा वक्त गुजरता है
ऐसे ही तेरी माँ.....

कभी तुम घर भी लौटोगे
कभी तुम चौखट लाँघोगे
इन अंतिम सांसों की

इन अंतिम सांसों की
कभी तो हिम्मत बांधोगे
इन अंतिम सांसों.....

मैं तो समझ गया पगला
यह चौखट छोटी-सी तो है
पर सिसकी मैं भी भरता हूँ
तेरी माँ जो रोती है
पर सिसकी मैं.....



श्रेय गोयल
(एमबीए 25169)

गुनाह की परिभाषा

वक्त से हारा, एक वृद्ध के समान,
दीनता के फंदों से कैद,
मेरी विवशता ही मेरा गुनाह है।

रूढ़िवादिता से आतंकित,
छवि खोने की दहशत से सिमटा,
मेरा भय ही मेरा गुनाह है।

द्युत्सभा सभा के भीष्म-सा निरुत्तर,
हृदय में चलते युद्ध से अश्रुत,
मेरा मौन ही मेरा गुनाह है।

यदि अन्याय का आधार मेरी नैतिक पराजय है,
तो गुनहगार समाज भी है,
क्योंकि जिसने प्रश्न छीन लिया,
उसने ही गुनाह की परिभाषा लिखी है।



अतुल श्रीवास्तव
(वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी)

किताबों से इश्क़ का ये आखिरी दौर है

किताबों से इश्क़ का ये आखिरी दौर है,
अब ये कहूँ तो नाराज़ न हो जाना-
कि अब हम पढ़ना तो चाहते हैं,
मगर हम अब पढ़ना नहीं चाहते।
किताबें खामोश राह तकती हैं
के मुसाफिर बेअदब निकल जाता है

हाँ, अजीब-सी बात है न—
कभी जिन किताबों के पन्नों में
हमने अपनी पूरी दुनिया बसा रखी थी,
आज उन्हीं पन्नों तक पहुँचने के लिए
वक़्त तलाशना पड़ता है।

किताबें अक्सर मुझसे पूछा करती हैं—
“यूँ मयस्सर न हुआ तुमसे,
कि कुछ पन्ने हमारे भी पलटते?
ज़िंदगी यूँ ही खर्च किये जा रहे हो”

शायद इसलिए आज
दिल के किसी कोने से आवाज़ आई है-
किताबों से इश्क़ का ये आखिरी दौर है।

अब रद्दी वाला आता है,
वह मुझे मेरी जगह से
बेगाना कर देता है-
एक-एक किताब उठाता है,

उसका वज़न करता है,
कुछ सिक्के गिनता है
और आगे बढ़ जाता है।

फिर कभी ज़िंदगी बड़ी खामोशी से
एक अजीब-सा करिश्मा भी कर देती है।

कोई शख्स आता है,
रद्दी के उस ढेर में भी
मेरी तलाश करता है।
वह किताब उठाता है,
उसके पन्ने पलटता है,
शायद कुछ पढ़ता है,
शायद कुछ महसूस करता है-
और फिर उसे अपने साथ ले जाता है।

उस शख्स से मिलता हूँ
तो दिल को थोड़ी तसल्ली होती है-
चलो, मेरा मूल्य कम हुआ है,
पर मेरा मोल तो नहीं।
इसलिए बार-बार
मन यही कहता है—
किताबों से इश्क़ का ये आखिरी दौर है...
किताबों से इश्क़ का ये आखिरी दौर है।



शुभम सक्सेना
(प्रशासनिक सहयोगी)

मेरा प्रयास

परिवर्तनशील इस विश्व में, नव युग की है पुकार,
ज्ञान बने अब दीप सा, जो मिटाए हर अंधकार।

सूचना के इस सागर में, सत्य का हो विस्तार,
विवेक की धारा से ही, सजे उज्ज्वल संसार।

नेतृत्व हो ऐसा जहाँ, हो साहस और विचार,
स्वार्थ से ऊपर उठ सके, जन-हित जिसका आधार।

जो राह दिखाए भीड़ को, बनकर दृढ़ पतवार,
संकट में भी थाम ले, विश्वासों की डोर अपार।

सामाजिक उत्तरदायित्व का, हर मन में हो वास,
सेवा, संवेदना, समर्पण — यही हो जीवन-श्वास।

मैं भी अपनी क्षमता से, करूँ यही प्रयास,
ज्ञान, नेतृत्व, कर्म से, बदलूँ जग का इतिहास।

छोटा सही कदम मेरा, पर दृढ़ मेरा विश्वास,
परिवर्तन की इस धरा पर, मेरा यही प्रयास।



राजीव ठाकुर

प्रशासनिक सहायक (संपदा विभाग)

बचपन एक वरदान

बचपन कुछ अनजाना सा,
मन जैसे कोई खज़ाना सा,
न उम्र से कुछ पाना था,
बस प्यार ही तो पाना था।

दुनिया से मैं था अनजाना सा,
हर दिन लगता था सुहाना सा,
ना कल की चिंता, ना कल का डर,
बस खेल ही था अपना घर।

माँ का प्यार, वो मीठा दुलार,
जिसमें समाया सारा संसार,
उस आँचल की ठंडी छाया,
हर दुख को पल में दूर भगाया।

पापा के साये में मैं सुरक्षित,
उनके शब्द थे मेरे लिए निश्चित,
उनकी उंगली थामे चलता था,
हर राह में साहस मिलता था।

वो नन्हे हाथ, वो मासूम हँसी,
हर पल में थी एक रोशनी बसी,
ना कोई स्वार्थ, ना कोई छल,
दिल था जैसे निर्मल जल।

जब चोट लगती थी घुटनों पर,
आँसू रुक जाते थे माँ के स्पर्श पर,
पापा की एक मुस्कान भर से,
सारा डर छुप जाता था दिल के घर से।

वो कागज की नावें, वो बारिश का पानी,
हर शाम लगती थी कहानी,
मिट्टी में सपनों के महल बनाना,
टूटे तो फिर से मुस्कुराना।

आज भी जब आँखें बंद करता हूँ,
उन गलियों में खुद को पाता हूँ,
जहाँ हर रिश्ता सच्चा था,
और हर सपना अपना सा था।

सचमुच बचपन एक वरदान,
ईश्वर का सबसे सुंदर दान,
जिसे याद कर भीग जाती हैं आँखें,
और दिल कह उठता है—
काश वो दिन फिर लौट आएँ।



साक्षी सिंह
(प्रशासनिक सहयोगी)

परिवर्तन की आँधी

परिवर्तन की इस चलती आँधी में,
पुस्तकों की खुशबू यूँ उड़ गई,
जैसे मुरझाए फूल की, पंखुड़ी सी झड़ गई।

हाथों में अब मोबाइल है,
और कंधे पर लैपटॉप का बस्ता,
गूगल की इस दुनिया में,
अब डेटा है सबसे सस्ता।

ए.आई कर रहा हर दिन नए चमत्कार है,
डिक्शनरी और एटलस अब सब बेकार हैं,
अब मानव की सोच से आगे चल रहा संसार है,
परिवर्तन की इस चलती आँधी में,
फेसबुक, इंस्टा की जय जयकार है।

हाय, हेलो की इस दुनिया में,
अब सभ्यता का अभाव है,
दया, करुणा, प्रेमभाव से,
कोसों दूर मानव व्यवहार है,
परिवर्तन की इस चलती आँधी में,
जो थाम सको वो थाम लो,
बहुत कुछ बदल चुका है,
अब बस यहीं विराम दो।



शिवानी मौर्य
(प्रशासनिक प्रशिक्षु)

भारत की आत्मवाणी

कभी था भारत ज्ञान की धरती,
वेदों की मधुरतम वाणी थी।
परिश्रम, साहस, एकता से
जीवन में उजली कहानी थी।

भिन्न-भिन्न थे जाति-वर्ग सब,
पर मन में था सम्मान प्रबल,
न्याय, नीति और सत्य मार्ग पर
चलता था जन-जन निर्मल।

नारी भी थी शक्ति स्वरूपा,
विद्या, नीति की अधिकारी,
सभा-संवादों में सम्मिलित,
वह भी थी उत्तरदायी नारी।

पर समय चक्र ने करवट ली,
लोभ ने जब मन को घेरा,
स्वार्थवश कुछ लोगों ने फिर
ज्ञान का अर्थ बदल डाला सारा।

सत्य ग्रंथों की वाणी को
अपने अनुसार मोड़ा गया,
धर्म के पावन नाम तले
अज्ञान का बीज बोया गया।

जाति-वर्ग के नामों पर फिर
मनुष्य-मनुष्य से दूर हुआ,
सवालियों की ज्योति बुझाकर
अंधविश्वास भरपूर हुआ।

सबसे गहरी चोट पड़ी तब
नारी के स्वाभिमान पर,
कर्तव्य कहकर सीमित कर दी
उसकी शक्ति पहचान पर।

उसने भी चुपचाप सहा सब,
भाग्य समझ स्वीकार किया,
बंधन को ही धर्म मानकर
जीवन का विस्तार किया।

ज्ञान-पथ पर चलने का साहस
हर मन में फिर पला है।

नारी ने फिर कलम उठाई,
अपने अधिकार पहचाने,
मेहनत, विज्ञान और शिक्षा से
नए स्वप्न स्वयं सजाने।

अब प्रश्न उठेंगे, सत्य जगेगा,
विवेक मार्ग दिखाएगा,
अंधकार के हर कोने में
ज्ञान प्रकाश फैलाएगा।

आत्मनिर्भर भारत का अर्थ
केवल धन-संपदा नहीं,
स्वाभिमान, समता और शिक्षा से
बढ़कर शक्ति कहीं नहीं।

जब हर मनुष्य संग चलेंगे,
भेदभाव सब मिट जाएगा,
सत्य, श्रम और जागरूकता से
भारत फिर जगमगाएगा।



अमित प्रताप सिंह
प्रशासनिक कार्यकारी
निदेशक कार्यालय

हमारा भारत

धरती पर स्वर्ग सी भूमि है,
बर्फ से ढके पहाड़,
हरी-भरी है वादियाँ,
हिमालय की हैं चोटियाँ विशाल,
निर्मल झीलें, सवारी शिकारा की,
बात है निराली, हमारे भारत की।

सात बहनों का क्या कहना,
घाटी तवांग की, उद्यान काजीरंगा का,
झील लोकतक वाली,
हरे-भरे बागान चाय के,
देखे हैं चेरापूँजी और मासिनराम,
झरने, गुफाएँ और जीवित जड़ के पुल का काम,
अद्भुत है सुंदरता सात बहनों की,
बात है निराली हमारे भारत की।

धरा थार मरुस्थल की,
पर्वत श्रृंखला अरावली और नीलगिरि की,
गोदावरी और कृष्णा की घाटी,
सोना उगलने वाली नदियाँ,
कुछ बात है इन अविश्वसनीय नजारों की,
बात है निराली हमारे भारत की।

जलप्रपात चित्रकूट और हुंडरू का,
रण कच्छ सा और जंगल जिम कॉर्बेट और गिर का,
सुंदर से बैकवाटर्स,
नारियल से सजे समुद्र के तट,
बागान सेब के, घाटी फूलों की,
कुछ बात है इन मनमोहक दृश्यों की,
बात है निराली हमारे भारत की।

घने वन से घिरे कान्हा और बांधवगढ़,
नागफनी सी सुंदर पचमढ़ी,
निर्मल पावन गंगा-यमुना की धारा,
झील चिल्का सी, वन बाँस के,
चोटी कंचनजंगा और विंध्याचल की,
कुछ बात है इन अकल्पनीय बहारों की,
बात है निराली हमारे भारत की।



आशीष पारीक
(प्रशासनिक सहयोगी)

मासूम मुस्कानें—जो लौट न सकीं

जाते थे रोज पाठशाला लेने शिक्षा की समझदारी,
अंधकार में थी उजियारा करने की तैयारी।

रखी माँ-बाप ने अपनी ममता बलिहारी,
राह तकती थी रोजाना आँखें बेचारी।

मगर जिम्मेदारों ने बरती लापरवाही भारी,
उजाड़ डाली अभिभावकों की सुंदर फुलवारी की क्यारी।

भ्रष्टाचार की भेंट चढ़े सुकुमार, सुकुमारी,
जब भ्रष्ट तंत्र के मलबे तले दबे बच्चों से निकली लहू की पिचकारी।

रोते पिता, बिलखती माँ दुखियारी,
देखा जब उन्हें बेसुध, क्षत-विक्षत,
निकली चीत्कार करती किलकारी।

आई जब वो घड़ी अंधियारी—
न था अधिकारी, न था सत्ताधारी
और न ही उसकी कोई संतति प्यारी।

झाड़ पल्ला बने रहे मूक दर्शक,
न समझी अपनी जिम्मेदारी,
ठहरा दी गलती सारी सरकारी।

जीर्ण-शीर्ण भवन की अनदेखी से आई आँच सारी,
मगर अब भी पदाधिकारियों के प्रोटोकॉल की थी पूरी तैयारी।

थी स्थिति अत्यंत विस्मयकारी,
आँखों से अशकों की धारा

रोके न रुक पा रही।



राम मोहन गुप्ता

प्रशासनिक कार्यकारी (प्रवेश विभाग)

बगिया का कोना

बगिया के एक शांत कोने में,
एक छोटे से फूल ने अपना सिर उठाया।
उसका एक छोटा, पावन और उज्ज्वल अरमान था—
सुबह की धूप में धीरे से चमकना और जगमगाना।
पास ही प्यार से लिपटी एक छोटी सी कली ने,
उम्मीद भरी सांस लेकर उस खिलते फूल को देखा।
"बिल्कुल तुम्हारी तरह बनना है," उसने दबी आवाज़ में फुसफुसाया,
"अपनी पंखुड़ियाँ खोलना, चमकना और बढ़ना है।"
मिट्टी की गहराइयों में, एक छोटे से नम्र बीज ने,
उस चमकीले फूल को बड़े गौर से देखा।
"उसका सफ़र पूरा हुआ, उसने अपनी प्यारी दौड़ पूरी कर ली,
ताकि वो पीछे ऐसे बीज छोड़ जाए जो इस जगह को रोशन करेंगे।"
बीज से कली, और फिर दिव्य फूल का खिलना—
हर कोई अपने समय पर चमकने के लिए ही बना है।



अजय कुमार
सम्पदा विभाग

उठ, गिर, उठ, कदम बढ़ा,
तू कर दिखाएगा।

एक दिन, तेरा वक्त अवश्य आएगा।
हिम्मत कभी ना हारना,
बस चलते जाना, तू रुकना नहीं कभी,
इरादों को अपने, चट्टानों से भी मजबूत बनाना।

उठ, गिर, उठ, कदम बढ़ा,
तू कर दिखाएगा।
अँधेरों से कभी मत घबराना।
लेकर मन में अपना आत्मविश्वास,
बस तू चलते ही जाना।
तेरे आत्मविश्वास को तोड़ने के लिए,
आएँगी अनेकों ही उलझनें।
पर तू इनसे कभी मत घबराना,
लेकर मन में अपना आत्मविश्वास,
बस तू चलते ही जाना।

उठ, गिर, उठ, कदम बढ़ा!
तू कर दिखाएगा।

अकेला कभी मत समझना, तू अपने आप को,
तू मेरा प्यारा बेटा है, तेरे साथ परमात्मा है।
तुझे कभी कुछ चाहिए, तो इसी से माँगना।

रुकना मत कभी, लेकर मन में अपना आत्मविश्वास!
बस तू चलते ही जाना।

उठ, गिर, उठ, कदम बढ़ा!
तू कर दिखाएगा।

आज अँधेरा देखकर मत घबराना!

आज अँधेरा है तो क्या हुआ,

कल उजाला भी आएगा।

तेरा आज का यह परिश्रम,

तेरी सफलता बन जाएगा।

उठ, गिर, उठ, कदम बढ़ा!

तू कर दिखाएगा।

तू तो परिश्रम कर,

रास्ता खुद-ब-खुद बन जाएगा!

आज की परिस्थिति में, जो तेरा साथ नहीं दे रहा!

कल वह तेरा सपना बन जाएगा।

उठ, गिर, उठ, कदम बढ़ा!

तू कर दिखाएगा।।



संजीव कुमार
(पुस्तकालय विभाग)

मेरा जीवन है तुझसे , मेरे जीवन का आधार है माँ ।
देखकर दिल को मिले सुकून, हर धड़कन में विराजमान है माँ ॥

हूँ निडर इस ज़माने से , हर परिस्थिति में मेरे साथ है माँ ।
देखा नहीं कभी साक्षात् प्रभु को, तू मेरे लिए भगवान है माँ ॥

मिलती है देखकर खुशी तुझको, तू मेरा अभिमान है माँ ।
हूँ जो कुछ भी आज मैं , जग में तुझसे मेरी पहचान है माँ ॥

जिंदगी छोटी ही सही, हर पल तुझ पर कुर्बान है माँ ।
झेले हैं कितने कष्ट तूने, इन कष्टों से सब अनजान हैं माँ ॥

हो गर कभी पुनर्जन्म मेरा, तेरा ही आँचल पाऊँ माँ ।
दर्द सहे हैं तूने कितने, चेहरे पर फिर भी मुस्कान है माँ ॥

तू निरक्षर है ये मालूम मुझे, फिर भी तू कितनी गुणवान है माँ ।
हैं जग में सब मतलब के, एक तू ही है जो निःस्वार्थ है माँ ॥

भाई - बहन मेरे और भी हैं , पर मुझ पर अधिक दुलार है माँ ।
दुनिया जाए तीर्थ घूमने, पर तू मेरे चारो धाम है माँ ॥

मिला है ये जन्म तुझसे मुझको, है तुझको मेरा प्रणाम माँ ।
धूल मात्र हूँ तेरे चरणों की , तू कितनी महान है माँ ॥

कोई हसरत नहीं तुझे पाकर, मेरा अनमोल उपहार है माँ ।
तू मेरी पहली गुरु और प्यार है, इस धरा पर तू ही मेरा संसार है माँ ॥

मेरा जीवन है तुझसे , मेरे जीवन का आधार है माँ ।
देखकर दिल को मिले सुकून, हर धड़कन में विराजमान है माँ ॥



सुरेन्द्र कुमार
संपदा विभाग (बागान)

पर्यावरण

कितने प्यारे पेड़-पौधे हमारे
हम सब जीव-जंतु इनके सहारे
कितनी जरूरती जड़ी-बूटियाँ पाते
हम सब इनके सहारे
प्राकृतिक वनस्पतियाँ बार-बार यही पुकारें
कोई ना आकर हमारा जीवन उजाड़े
समताप मंडल पर ओज़ोन परत यही पुकारे
मुझे सुरक्षित करने के लिए ज्यादा से
ज्यादा पेड़-पौधे लगाओ प्यारे
नीम पीपल बरगद लगा लो प्यारे
और इन्हें लगाकर हानिकारक गैसों से
हम सब का जीवन बचा लो प्यारे



गौरव बधानी
(पुस्तकालय विभाग)

देवभूमि के रीति-रिवाज और जीवन

ये हैं पहाड़ों के रीति-रिवाज,
जहाँ इंसान से पहले... इंसानियत निभाई जाती है।

सुबह की हवा में अपनापन बसता है,
और शाम की चाय में... रिश्तों की गरमाहट मिल जाती है।

कोई अनजान भी राह भटक कर आ जाए,
तो चाय-पानी पूछे बिना... कौन पहाड़ी कहलाए।

कम में भी बाँट लेना हमने सीखा है,
सादगी में ही... सुख का असली अर्थ देखा है।

शहरों में खबरें अखबारों से आती हैं,
पहाड़ों में हर बात... पहले ही फैल जाती है।

किसके घर क्या हाल है, सबको रहता ज्ञान है,
क्योंकि अपनापन ही... यहाँ की असली पहचान है।

यहाँ किसी के पेड़ से फल तोड़ना अपराध नहीं,
जरूरत पड़े तो... कोई भी यहाँ लाचार नहीं।

मुसीबत की आहट होते ही सब पहुँच जाते हैं,
एक-दूसरे के दुःख को... अपना मान जाते हैं।

जब दुख या बीमारी घर तक आ जाए,
दादा-दादी के नुस्खे पहले याद आएँ।

पहले घर के नुस्खों से मिलता है आराम,
फिर जरूरत पड़े तो डॉक्टर का लिया जाता है नाम।

रीति-रिवाजों में बसता है पहाड़ों का अभिमान,
मेहमान आए तो... देवतुल्य मिलता सम्मान।

देवभूमि की माटी, प्रकृति से जुड़ा जीवन,
यहीं से जन्म लेता है... सच्चा अनुशासन।

घास-लकड़ी हो या कोई पारिवारिक काम,
सब कंधे से कंधा मिलाकर... करते हैं अंजाम।

कार्यक्रम हो या दुःख की कोई घड़ी,
बाहर से किसी को बुलाने की... जरूरत नहीं पड़ी।

जब घर की रसोई में खुशबू छा जाए,
पड़ोसी का हक... पहले निभाया जाए।

आदर, सहयोग और आपसी विश्वास,
इन्हीं मूल्यों से... होता पहाड़ों का विकास।

हर तीज-त्योहार, हर शुभ संस्कार,
कन्या-कुमार को मिले... मान और सत्कार।

हर वर्ष विधि-विधान से भूमिया देव की पूजा है होती,
धरती, खेत और घर-आँगन में... सुख-शांति का बीज है बोती ।

देव, धरती और धर्म से जुड़ा यह जीवन सारा,
इन्हीं आस्थाओं ने... पहाड़ों को बनाया हमारा सहारा।

कुछ ऐसा है पहाड़ हमारा,
यही है पहाड़ों में... जीवन जीने का सहारा।

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित किए गए कार्यक्रम / उपलब्धियाँ



भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर द्वारा दिनांक 16 से 30 सितम्बर, 2025 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया | हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का फीता काटकर शुभारंभ करते हुए माननीय निदेशक महोदय, प्रोफेसर नीरज द्विवेदी |



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में हिंदी की प्रसिद्ध पुस्तकों को देखते माननीय निदेशक महोदय प्रोफेसर नीरज द्विवेदी, प्रोफेसर के. एन. बधानी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल अजय कुमार उपाध्याय साथ में उपस्थित संस्थान के अन्य कर्मचारीगण ।



हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह दिनांक 29 सितम्बर 2025 के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए माननीय निदेशक महोदय, प्रोफेसर नीरज द्विवेदी, तथा सामूहिक फोटोग्राफ में स्मृति चिह्न व प्रमाणपत्रों के साथ उपस्थित विजेता व अन्य |



हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह दिनांक 29 सितम्बर 2025 के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए माननीय निदेशक महोदय, प्रोफेसर नीरज द्विवेदी, तथा सामूहिक फोटोग्राफ में स्मृति चिह्न व प्रमाणपत्रों के साथ उपस्थित विजेता व अन्य ।



दिनांक 05 जनवरी 2026 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में दीप प्रज्वलित करते हुए मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल अजय कुमार उपाध्याय |



एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला के दौरान व्याख्याता डॉ. ओमप्रकाश जी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए, माननीय मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल अजय कुमार उपाध्याय |



वार्षिक हिंदी पत्रिका के आगामी प्रकाशन के संबंध में दिनांक 20 जनवरी, 2026 को आयोजित बैठक के दौरान पत्रिका के पंजीकरण, मुद्रण, उत्कृष्ट लेख, शोध-पत्र, निबंध एवं कविताओं को सम्मिलित किए जाने जैसे- विषयों पर चर्चा करते सम्मानित समिति सदस्यगण ।



IIM KASHIPUR

भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर
कुण्डेश्वरी,
ऊधम सिंह नगर, काशीपुर - २४४७१३